महर्षि मेँहीँ

(अंगिका महाकाव्य)

हीरा प्रसाद "हरेन्द्र"

चन्द्रकान्ता प्रकाशन, कटहरा

कृति : महर्षि मेँहीँ
(अंगिका महाकाव्य)

कृतिकार : हीरा प्रसाद हरेन्द्र

महामंत्री : अखिल भारतीय अंगिका साहित्य कला मंच

सर्वाधिकार : प्रवीण कुमार प्रणव

प्रकाशन तिथि : 2016 (जेठ शुक्ल पक्ष एकादशी)

प्रकाशक : चन्द्रकान्ता प्रकाशन, कटहरा

शब्द संयोजन व मुद्रण : मोदी ऑफसेट प्रिंटर्स
आत्माबाजार, पहली मंजिल,
सुलतानगंज (भागलपुर)

सहयोग राशि : 150/- ₹

सम्पर्क : ग्राम+पो०-कटहरा,भाया-सुलतानगंज,
जिला-भागलपुर (बिहार)813213

MAHARSHI MEHIN (MAHA KAWYA)
By ***Hira Prasad 'Harendra'***

पुस्तक प्रकाशन में सहयोगीगण

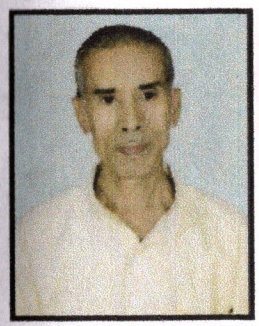

श्री राजेन्द्र प्रसाद मंडल
सेवा निवृत शिक्षक
N.G.A. उच्च विद्यालय,
दुधैला, बैकुण्ठपुर,
सुलतानगंज,भागलपुर
ग्राम–दुधैला, थाना–सुलतानगंज,
जिला–भागलपुर, पीन–813213
मो0–7352650065

श्री मोहन प्रसाद मंडल
सेवा निवृत शिक्षक
ग्राम–दुधैला, काली स्थान,
(राघोपुर निवासी) थाना–सुलतानगंज,
जिला–भागलपुर, पीन–813213,
मो0–7562963695

श्री महेश्वर पंडित (M.A.)
(सेवा निवृत शिक्षक)
ग्राम–दुधैला, काली स्थान,
थाना–सुलतानगंज, जिला–भागलपुर,
पीन–813213,
मो0–9122540985

पुस्तक प्रकाशन में सहयोगीगण

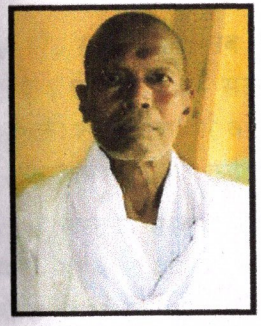

स्वामी निर्मल स्वरूप बाबा
उर्फ नकुलदेव बाबा
सुपुत्र–श्यामलाल बाबा
ग्राम–दुधैला, मुंशीपट्टी रोड,
पो0–गंगापुर, थाना–सुलतानगंज,
जिला–भागलपुर, पीन–813213
मो0–9955838267

श्री लक्ष्मी प्रसाद सिंह
सेवा निवृत शिक्षक
नारायणपुर तरैटा,
थाना–सुलतानगंज,
जिला–भागलपुर, पीन–813213
मो0–8298844669

श्री विभाष कुमार (सैनिक)
ग्राम–नारायणपुर,
पो0+थाना–सुलतानगंज,
जिला–भागलपुर, पीन–813213
मो0–9435874146

।। भिद्यते हृदय ग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्व संशया:।।

'भिद्यते हृदय ग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्व संशय:' यानी जिनकों हृदय के गिरह–गाँठ खुली जाय, सब संशय छिन्न–भिन्न होय जाय आरू सब कर्म नष्ट–भ्रष्ट होय जाय वहें संत कहलाबै छै। शांति स्थिरता आरू निश्चलता कें कहै छै। शांति प्राप्त करै वाला कें संत कहलों जाय छै आरू वहें सन्तों के मत आरू धर्म सन्त मत कहलाय छै।

भारत के संस्कृति ऋषि–मुनि के संस्कृति रहलों छै। यहाँ सब्भे युगों में समय–समय पर एक पर एक सन्त मनीषी अवतरित होतें रहलों छै। व्यास, बाल्मीकि, शुकदेव, नारद, याज्ञवल्क्य, जनक, वशिष्ठ, दधीचि, बुद्ध, महावीर, शंकर, रामानन्द, नानक, कबीर, सूर, तुलसी, विवेकानन्द,रामतीर्थ, सन्त तुलसी साहव, परम सन्त बाबा देवी साहव अहिनों ऋषि आरू सन्तों के गौरवमयी कड़ी कें लम्बा करै में सन्त सद्गुरु महर्षि मेँहीं परमहंस जी महाराज अवतरित होलों छेलै।

देश आरू समाज में कौरव–कंस के राज छेलै, आततायी के माथा पर ताज छेलै। कृष्ण भी गीता के ज्ञान देना छोड़ी कें कहीं लापता छेलै। अत्याचार–दुराचार के बोलबाला छेलै। लोग अपनों राह दर–दर खोजै में उताबला छेलै। ई सब्भे असामाजिक तत्वों के सामना करै लेली ईश्वर आराधना आरु भक्ति के एक अविरल धारा अल्हड़ मदमस्त जवानी लेनें कलकल–छलछल के ध्वनि सें ध्वनित होलों प्रियतम महौदधि सें मिलै लेली उतावली होय रहलों छेलै। वै धारा कें तीव्र सें तीव्रतर बनावै में महर्षि मेँहीं बाबा अवतरित होय कें जे सहयोग करलकै ओकरों गवाह देश–विदेश के लाखों सत्संगी आरू शताधिक अखिल भारतीय सत्संग महासभा आरु महाधिवेशन छै।

ईश्वर हुवें चाहें महापुरुष अवतरित होय कें जब नरलीला करै छै, उनका दुख:–सुख, भय–त्रास, रोग–शोक आरू भूख–प्यास सतैबे करतै। सीता के खोज में भटकतें प्रभु श्री राम जी कें जंगल में ऋषि–मुनि परमेश्वर समझी के आदर दै आरु झुकै के प्रयास करै, परन्तु श्री राम जी ई कही कें टाली दै कि हम छोटों का सम्मान करना आप की महानता है। नरलीला में अवतारी

कें मनुष्य के तरह आचरण करें पड़ै छै। उनकों जीयै के ढंग अहिनों अनुकरणीय होय छै कि सब कोय अपनाबें चाहै छै आरू जीवन में उतारें चाहै छै।

ऊपर लिखलों हर बात कें जीवन में उतारै वाला महर्षि मेँहीं बाबा के आकाश अहिनों विशाल हृदय, शिरीष सुमन रङ् कोमल वचन आरू दूधों रङ् निर्मल–उज्ज्वल चरित्र देखी कें इनका दिव्य पुरुष मानै सें कोय इनकार नैं करें पारें।

महर्षि मेँहीं बाबा के चरित्र ढेरी लेखक, भक्त आरु विद्वानें अपनों–अपनों ढंग से लिखनें छै। आत्मशोधक जी तें पंजाबी में 'जीवन साखी सतिगुरु महर्षि मेँहीं' लिखी कें बाबा के प्रसाद सब जगह बाँटी देलकै। सत्संगीगण सराहना के साथ हिन्दी में अनुबाद होय के अनुशंसा भी करलकै। परिणाम स्वरूप 'जीवन यात्रा सद्गुरू महर्षि मेँहीं' लिखलों गेलै। नागेश जी द्वारा भी 'महर्षि मेँहीं संक्षिप्त जीवन–वृत्त और उपदेश' में पूरा–पूरा बाबा के चरित्र समेटलों गेलों छै। २००२ ई० में ही विज्ञापन छपलों छेलै–'पूज्य सद्गुरु महाराज जी का जीवन चरित्र अब नेपाली भाषा में भी शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है।' प्रकाशक–साधना नंद 'सरस्वती', महाभारा, झापा (नेपाल)।

परम हंस महर्षि मेँहीं बाबा के जन्म स्थल सहरसा (आबें मधेपुरा) आरू कर्म स्थल कुप्पाघाट, भागलपुर दोनों दानवीर कर्ण के अंग प्रदेश के चर्चित स्थल छेकै। यहाँ के भाषा अंगिका छेकै। अंगिका भाषा में महर्षि मेँहीं बाबा के चरित्र गाबै लेली मन विह्वल होय गेलै। बाबा के चरित्र सें संबंधित तथ्य के खोज में कई सत्संग भवन आरू सत्संगीगण सें सम्पर्क साधलियै। उपलब्ध तथ्य के आलोक में दिन–रात एक करी कें अंगिका भाषा में ''महर्षि मेँहीं'' तैयार करलियै जे सुधी पाठक के आगू परोसी फूला नै समाय छी।

अंत में हम्में छोटे बाबा के प्रति आभार प्रकट करै छियै, जिनी काव्य कें लोकप्रिय बनाबै लेली दू शब्द लिखै में बहुमूल्य समय कें लगैनें छै। आभारी तें उनको छियै जिनी काव्य के प्रकाशन में भरपूर सहयोग सें अगला प्रकाशन लेली प्रोत्साहित करनें छै।

।ऊँ श्री सद्गुरुवे नमः।।

महाकवि श्री हीरा प्रसाद 'हरेन्द्र' जी विद्या के समर्पित उपासक हैं। मैं मानता हूँ कि हिन्दी और अंगिका भाषा पर इनका पूरा अधिकार है। ये मूलतः कवि हैं और इनकी काव्य प्रतिभा प्राकाष्ठा तक पहुँची हुई प्रतीत होती है। इन्होंने छन्द शास्त्र के नियमों का पूरी तरह पालन किया है।

अंग देश के संत सद्गुरु महर्षि मेँहीं परमहंस जी महाराज को अंगिका भाषा से बड़ा प्रेम था। इनकी बोल चाल की भाषा अंगिका और मैथिली थी। ये खड़ी बोली हिन्दी में प्रवचन किया करते थे। कहीं–कहीं इन्हें अंगिका और मैथिली में भी प्रवचन करते सुना है।

कविवर हरेन्द्र जी ने अंगिका भाषा में महर्षि मेँहीं नामक महाकाव्य की रचना की है। मुझे लगता है अंगिका भाषा में एक संत की जीवनी लिखे जाने पर अंगिका भाषा गौरवान्वित हुई है। यदि इसी प्रकार की अच्छी–अच्छी पुस्तकें अंगिका भाषा में लिखी जाएं तो अंगिका भाषा पढ़ने लिखने की लोकप्रियता बढ़ जाएगी।

सद्गुरु महर्षि मेंहीं परमहंस जी महाराज की जीवनी पद्यात्मक जीवनी कई विद्वानों और महात्माओं ने लिखी है। इन पुस्तकों में से किसी की भाषा सधुक्कड़ी है तो किसी खड़ी बोली हिन्दी। इन सभी जीवनी पुस्तकों में श्री हरेन्द्र जी की जीवनी पुस्तक मुझे उत्तम जान पड़ती है जो अंगिका भाषा में लिखी गई है। इनके महर्षि मेँहीं महाकाव्य में महाकाव्य के सारे गुण मौजूद पाए जाते हैं। पुस्तक के सारे सर्गों में भिन्न–भिन्न छन्दों का प्रयोग किया गया है। ये मार्मिक छन्द कुछ मात्रिक हैं कुछ वर्णिक हैं। पुस्तक के पद्य गेयता से परिपूर्ण है।

ऐसी सुन्दर रचना के लिए मैं महाकवि की प्रशंसा करता हूँ और गुरुदेव से प्रार्थना करता हूँ कि यह पुस्तक शीघ्र छप कर सत्संग प्रेमियों के बीच आ जाए और कवि को अक्षय कीर्ति की प्राप्ति हो। मेरा ऐसा विश्वास है कि यह पुस्तक सत्संग प्रेमियों के बीच बड़ी लोकप्रिय होगी। यदि सत्संग प्रेमी इसके महत्व को अच्छी तरह समझ लेंगे तो इस ग्रंथ का वे प्रति दिन पाठ करेंगे और गुरुचरणों की भक्ति प्राप्त करेंगे।

कविवर ने सद्गुरु महर्षि मेँहीं परमहंस महाराज की गुण गाथा गाकर उनके प्रति अपनी असीम श्रद्धा और भक्ति भावना प्रकट की है। मानस की नवधा भक्ति के अनुसार कवि ने चौथी भक्ति पूरी की है— चौथी भगति मम गुनगन करई कपट तजि गान।

इस पुस्तक के लिखने से कवि ने महापुण्य का कार्य किया है और अवश्य ही सद्गुरु महर्षि परमहंस जी महाराज के कृपा पात्र बने हैं।

मैं आशा करता हूँ महाकवि इसी प्रकार की उत्तम–उत्तम रचनाएँ समाज को देकर साहित्यिक सेवा करते रहेंगे और यश की प्राप्ति करते रहेंगे। जयगुरु।

छोटेलाल दास
१५/५/२०१३ ई०

सर्ग के बात

सर्ग एक : भारत–अंग–कुप्पाघाट में मेँहीं बाबा, महापुरुष के जीवन गाथा–जीवन शैली। महर्षि मेँहीं जन्म स्थान, जन्म तिथि (ईस्वी सन के साथें विक्रम संवत) जन्म वर्णन, तुलसीदास कें जन्म सें दाँत रहै, मेँहीं बाबा कें माथा में जट्टों, नामकरण, कुल, बचपन में माँ के मृत्यु, नानी आरू बहन द्वारा पालन।

सर्ग दू : मुण्डन, विद्यालय प्रवेश, आध्यात्मिक संस्कार, पिता के छाप, बहिन के विधवापन, पिता के विचार सें तालमेल नैं, परीक्षा।

सर्ग तीन : चार जुलाई चार अंग्रेजी के परीक्षा, प्रश्नोत्तर सें वैराग, बहिष्कार, विद्यालयी शिक्षा के अन्त।

सर्ग चार : पुँजी के अभाव फिर भी दानी, ठाकुर गंज, रिविलगंज, जोतराम राय जाना।

सर्ग पाँच : घर सें भागना, जानी पिता द्वारा खोज आरू बैरागों सें मुँह मोडै के उपाय।

सर्ग छह : ठाकुर कृष्ण सिंह षट्शास्त्री सें भेंट, यथार्थ पर आपत्ति, सारशब्द कें समझे के प्रयास, चतुरानंद शब्द पर आपत्ति, ऑल मेन मस्ट डाय के अध्ययन।

सर्ग सात : रामदास, धीरजलाल गुप्त सें गप्प, देवी बाबा आगू मेँहीं बाबा के चाह, भागलपुर के राजेन्द्र नाथ सें भेंट, भजन–भेद के प्राप्ति, देवी बाबा सें दर्शन।

सर्ग आठ : गुरु मंत्र जाप, त्राटक, मधुकरी वृत्ति, मुरादाबाद आना, पिता के आग्रह पर गाँव, वहीं सत्संग भवन निर्माण, ब्राह्मण के पेशा पर ब्राह्मण कें आपति, बाबा के तर्क।

सर्ग नौ : रसोइया के रूप में मेँहीं बाबा, देवी बाबा कें शंका, मेँहीं बाबा द्वारा समाधान।

सर्ग दस : माया गंज–कुप्पाघाटके महिमा, देवी बाबा द्वारा सुरत–शब्द योग (नादानुसंधान) की प्राप्ति। मधुकरी वृति पर देवी बाबा के आपत्ति, भिक्षाटन सें चोट, कर्ज पर रोक, देवी बाबा द्वारा बाँस आरू केला लगाबै के निर्देश, स्वावलम्बन के पाठ।

सर्ग ग्यारह : मुरादाबाद जाना, समय सें पहिनें लौटना, बाबा के डाँट, बाबा के कड़ा रूख।

सर्ग बारह : मैंहीं बाबा फोड़ा सें परेशान, नंदन के पत्र, देवी बाबा के निर्वाण, निर्वाण के समय मैंहीं बाबा अनुपस्थित, धरहरा में ध्यान कूप, देह के साथ हठ परित्याग।

सर्ग तेरह : मैंहीं बाबा के परिवार, केरल आरू कश्मीर के यात्रा, पुलिस इन्सपेक्टर के रौव, सत्संग में हरिद्वार, सिंध, करांची, मुल्तान, लाहौर, साथ में चार सत्संगी, गंगा वर्णन, सागर दर्शन, तीस ईस्वी में सत्संग भवन चार सौ के लेली निर्माण।

सर्ग चौदह : कुप्पा घाट गुफा में ध्यान, सुरंग में हड्डी, महात्मा के आगमन, अठारह महीना सुरत–शब्द–योग।

सर्ग पन्द्रह : 'सत्संग मेरी स्वाँस है', नौ सौ को भजन–भेद, सन्याल सें भेंट, बाबा के जयन्ती लेली प्रस्ताव, जगदीश कश्यप के आगमन मासिक पत्रिका पर विचार, नामकरण–शांति–संदेश, संपादक विश्वानंद।

सर्ग सोलह: चौतीसवाँ अधिवेशन,शिवपूजन सहाय द्वारा उद्घाटन, सुधांशु जी, द्विज जी उपस्थित, हिन्द, हिन्दी, हिन्दुस्तान शब्द के व्याख्या। विनोबा सें भेंट, कर्मयोग पर चर्चा।

सर्ग सतरह : महर्षि मैंहीं आश्रम कुप्पाघाट निर्माण, पुस्तकालय, औषधालय, गुफा निर्माण कब, यूकिको फ्यूजिता जापानी महिला, माइकेलबीसेण्ट के चाह, लाल सखे पर बाबा के कृपा, राष्ट्र प्रेम।

सर्ग अठारह: थाइलैण्ड, लाओस, कम्बोडिया के भिक्षु, सरोजनी नायडू द्वारा सम्मान, महेश योगी सें भेंट वार्ता, रविवार कें पश्चिम के यात्रा, पत्रकार विजय निर्वाध सें तर्क–वितर्क।

सर्ग उन्नीस: रूसी शिष्या नीना, शीला देवी कलकत्ता, गुफा में सर्प, सहिष्णुता के दूत, बाबा अन्तर्यामी, बाबा के उपदेश।

सर्ग बीस : देहं व्याधि मंदिरम्, बाबा अन्तर्मुख होना, अश्वत्थामा के मुक्ति, उन्मुनि यानी मनोलय।

सर्ग इक्कीस: बाबा के महासमाधि, संत सेवी बाबा द्वारा अग्नि संस्कार, समाधि मंदिर, दार्शनिक बाबा के दर्शन, चमत्कार, उपदेश, गुरु महिमा।

सर्ग–1

धरती पर छै स्वर्ग सरीखे, सुन्दर भारत देश।
अनेकता में एकों केरों, हरदम दै संदेश।।१।

स्वच्छ–धवल तुषार सें मंडित, नगपति पहरेदार।
भारतवासी के लेली छै, सच्चा प्राणाधार।।२।।

संस्कृति भारत देशों के छै, अनुकरणीय अनंत।
यै संस्कृति में पलै देश के, ज्ञानी ऋषि–मुनि–संत।।३।।

धन्य–धन्य छै हमरों भारत, धन्य यहाँ के लोग।
सब्भै केरों हृदय–पटल पर, स्नेह–शांति–तप–योग।।४।।

राम–कृष्ण के ई धरती पर, संतन केरों बास।
भक्तो गण सब धर्म धुरंधर, सबमें हर्ष–उल्लास।।५।।

याज्ञवल्क्य, बाल्मीकि यहाँ पर, कबीर, तुलसी, सूर।
रामतीर्थ शुकदेव हृदय मैं, महावीर मशहूर।।६।।

नारद, शंकर, जनक संत जी, वशिष्ठ, दधीचि व्यास।
नानक रामानन्द कहाबें, भक्त शिरोमणि खास।।७।।

बसै विवेकानंद जहाँ पर, भारत छै अनमोल।
साधु–संत केरों बोली में, छै मिश्री के घोल।।८।।

भारत के उत्तरी भाग में, अंग क्षेत्र विख्यात।
दानी कर्ण जहाँ के राजा, चर्चा छै दिन–रात।।९।।

सुलतानगंज शहर अंग के,देश–विदेशें नाम।
जहाँ बहै छै उतरवाहिनी, गंगा आठो याम।।१०॥

उ गंगा के बीच धार में, अजगैवी के धाम।
अजगैवी बाबा मेटै छै, असाध्य रोग तमाम।।११॥

मधुसूदन मंदार बसै छै, महिमा अगम अपार।
समुंद्र मंथन में देवों के,करने छै उपकार।।१२॥

अंग क्षेत्र उत्तर तरफों में, गेलों छै नेपाल।
दक्षिण दिशा बाबा धामों तक, छिरियैलों छै जाल।।१३॥

किउल नदी तक पश्चिम तरफें, सबकें छै मालूम।
उधवा नाला तक पूरव में,अंग–बंग के धूम।।१४॥

यै अंगों में एको पर छै, एक संत के वास।
जौनें बाँटै संसारों में, उज्ज्वल परम प्रकाश।।१५॥

ऊपर लिखलों नाम संत के, वहें कड़ी के रूप।
महर्षि मेँहीँ बाबा छैलै, जग में परम अनूप।।१६॥

नगर रेशमी भागलपुर में, आश्रम एक बिराट।
घर–घर, बच्चा–बच्चा जानै, ऊ छै कुप्पा घाट।।१७॥

कुप्पा घाटों के संन्यासी, महर्षि मेँहीँ दास।
लेथैं जिनकों नाम अखनियों, मेटै छै भय–त्रास।।१८॥

परम संत मेँहीँ बाबा के, परमोज्ज्वल व्यक्तित्व।
संत समाजों में छैलों छै, गौरवमयी कृतित्व।।१९॥

महापुरुष के जीवन गाथा, अनुपम अनुकरणीय।
जीवन–शैली, मार्ग बतैलों, हरदम अनुसरणीय।।२०॥

नर–नीला खातिर अवतारी, महापुरुष कें रोग।
भूख–प्यास, भय–त्रास सताबै,भेद न जानै लोग।।२१॥

लीला तें लीला ही होतै, खाक पकड़तै कोय।
सीता खोजों में प्रभु भटकै, कथा हमेशा ढोय।।२२॥

माँटी खैतें देख यशोदा, मारै लें तेयार।
मुँह खोली कें दिखलाबै छै, मुख में ही संसार।।२३॥

अका–बका सुर मारी–मारी,मेटै जग परिताप।
कागासुर, नागासुर देखी,करै बाप रे बाप।।२४॥

ईश्वर के पेटों में पीड़ा,के पतियैतै भाय।
मनमोहन तें नारद कें भी,देने छै चकराय।।२५॥

उद्धव जी के ज्ञान मिलावै,माँटी में यदुराय।
राधा जी केरों आगू में, बोले शीश झुकाय।।२६॥

बानासुर के अभिमानों कें, करै कृष्ण विध्वंस।
अनिरूद्ध–उषा के मिलन कहो, असुर संग यदुवशं।। २७॥

औघड़दानी केरों महिमा, कौनैं करै बखान।
भस्मासुर कें भय सें भागै, दौड़ै कृपा निधान।। २८॥

रूप मोहिनी तुरत बनाबै, करूणा के अवतार।
भस्मासुर कें भस्म करै कै, कथा ज्ञात संसार।। २९॥

रहै उदाकिशुनगंज थाना, जिला सहर्षा ठीक।
श्याम खोखशी पंचायत भी, ओहीठाँ नजदीक।। ३०॥

एक मंझुआ टोलों छोटों, रहै बड़ा रमनीक।
शहरी वातावरण वहाँ नैं, लोग रहै निर्भीक।। ३१॥

बलुआनद्दी बहथैं छेलै, भरलों पोखर–ताल।
पाटल संग अशोक वहाँ पर, कदली, बेणु, रसाल।। ३२॥

ग्रामीण जीवन सादगी सें, निश्छलता अपनाय।
भाईचारा भाव बनैनें, जीयै हरिगुण गाय।। ३३॥

शताब्दी उन्नीसवीं छेलै, दशक नवाँ के भाग।
ईस्वी सन् पच्चासी छेलै, सूरज उगलै आग।। ३४॥

अट्ठाइस अप्रैल जरा नैं, गर्मी मानै हार।
सातो में जे सबसें सुन्दर, छेलै मंगलवार।। ३५॥

उन्नीस सौ बियालिस छेलै, विक्रम संवत् मान।
संतावन वरसौं के अन्तर, दोनों के पहचान।। ३६॥

बैसाखों के चतुर्दशी कें, शुक्लपक्ष शुभ जान।
धरती पर कुछ हलचल मचलै, जकरों नैं अनुमान।। ३७॥

विद्यानिवास दासों के घर, जन्मै सुन्दर बाल।
रूपवान सुन्दर बालक के, चमकै छेलै भाल।। ३८॥

नाना के घर जन्मै बालक, जनकवती के गोद।
नाना विद्यानिवास मचलै, घर में मंगल–मोद।। ३९॥

आँख खोललक बालक जेन्हैं, चमकै पूरा घोंर।
दुख–दरिया उमड़ैलों छेलै, तुरत लेलकै कोंर।। ४०॥

सोलह–सोलह साथ चन्द्रमा, लागै करै प्रकाश।
देह धरी ऐलै सर्वेश्वर, होलै तब विश्वास।। ४१॥

सूरज रङ् चमकै मुखमंडल, साधु–सन्त के योग।
सुनी–सुनी सब दर्शन लेली, उमड़ें लगलै लोग।। ४२॥

देखी–सुनी अलौकिक बालक, गदगद सबके मोंन।
अहिनों सुन्दर बालक आगू, की संपत, की धोंन।। ४३॥

जन्मों सें बालक के माथा, छेलै जट्टों सात।
कंघी सें तोड़ै जब दिन में, फेनूँ वहिनें रात।। ४४॥

तुलसी दासों कें सब दाँते, छेलै जखनी जन्म।
तहिया नैं कुछ झलकै छेलै, ऐमें कुछ्छू मर्म।। ४५॥
दुनिया भर में नाम करलकै, देखों तुलसीदास।
मेँहीँ के माथा में जट्टों, मतलब छै कुछ खास।। ४६॥

तुरत ज्योतिषी बोलाबै के, बात कोय समझाय।
मिलथैं खबर ज्योतिषी दौड़ी, आबी गेलै भाय।।४७॥

जबें ज्योतिषी बालक देखै, गैलै नैन जुड़ाय।
जब माथापर जट्टों देखै, मन गेलै चकराय।।४८॥

पोथी–पतरा उलटी–पुलटी, बोलै तब आचार्य।
बालक केरों द्वारा होथों, जग में सुन्दर कार्य।।४९॥

देखै हाथों केरों रेखा, देखै फेनूँ भाल।
नाम रखलकै सोची–समझी, रामानुग्रह लाल।।५०॥

रामानुग्रह केरों दादा, छेलै नसीव लाल।
भरत लाल जी रहै सहोदर, एक वृक्ष दू डाल।।५१॥

भरत लाल जी बदलै वाला, बढ़िया करलक काम।
रामानुग्रह के हुनियें तें–राखै मैंहीं नाम।।५२॥

भरत लाल कें पुत्र तीन ठो, बड़का नौबत लाल।
सोहबत लाल मंझला रहै, छोटों तें दुन लाल।।५३॥

एगो पुत्र नसीब लाल कें, छेलै बबुजन लाल।
पहिली पत्नी फूलवती जे, लूटी लेलक काल।।५४॥

संतानहीनता के चलतें, दूसर करै विवाह।
जनकवती सें पूरा होलै, बबुजन जी के चाह।।५५॥

किलकारी सें घर कें हर्षित करलक झूलन दाय।
ठाम्हैं तीन बरस के अन्दर, रामानुग्रह आय।।५६॥

कर्ण कायस्थ कुले अवतरित, मैंहीं जी के बात।
बबुजन जी के कानें गेलै, ठाम्हैं रातो रात।।५७॥

बबुजन जी के खुशियाली के, नैं करभो विश्वास।
नाँचें लगलै सुनथैं दिल में, भरलै हर्षोल्लास।।५८॥

एक बात मैंहीं के पूर्वज, करै छेलै निवास।
जिला पूर्णियाँ केरों बीचें, काझी ग्रामें खास।।५९॥

कोशी नदी कटावों चलतें, मैंहीं के खनदान।
बनमनखी थाना में बसलै, भैया सब लें जान।।६०॥

सिकली गढ़ धरहरा कहाबै, परम मनोहर गाँव।
बैठी–बैठी समय बितावै, लोगें गाछी छाँव।।६१॥

सिकली गढ़ धरहरा गाँव में, हँसी–खुशी के राज।
जय–जयकारों सें घर–घर में गुंजै तब आवाज।।६२॥

शुभ दिन तब देखी के लानै, मैंहीं अपनों घोंर।
अवसर ताकी बरसें लगलै, टिप–टिप टिपटिप झोंर।।६३॥

ब्राह्मण सबकें बबुजन लालें, दै मनवांछित दान।
सब्भै के आशीर्वादों सें, पुत्रों के कल्याण।।६४॥

कुच्छू दिन तें रहलै घर में, हँसी–खुशी के राज।
नैं लगलै देरी तनियो टा, बदली गेलै साज।।६५॥

दिवस सुखों के जल्दी जैथों, दुक्खें करै तवाह।
दुक्खों कें सुक्खों सें हरदम, लगै सोतिया डाह।।६६॥

ठीक विधाता के विधान में, लिखलों छेलै और।
चार बरस में जनकवती भी, गेली दोसर ठौर।। ६७

बच्चा पालन लेली जानों, करै तेसरों ब्याह।
दयावती कें ऐथैं घर में, सब्भैं में उत्साह।। ६८

मैंहीं केरों लालन–पालन, नानी केरों हाथ।
झूलनदाय बहिन जे छेली, उनकों रहलै साथ।। ६९

ममता, करुणा, दया भाव सें, मैंहीं कें दे प्यार।
दून्हूँ मैंहीं के पालन के, लेनें छेली भार।। ७०

करुणा केरों सागर दोनों, सुन्दर बड़ा स्वभाव।
मैंहीं कें नैं कभी अखड़लै, माँ के जरा अभाव।। ७१

भला करै लें दुनिया भर के, मेटै लें भू भार।
ऐलै मैंहीं ई धरती पर, भक्तन के हिय हार।। ७२

जन्म–मरण सें दूर हमेशा, संतन के अवतार।
महर्षि मैंहीं केरों देखों, आगू जीवन सार।। ७३

○○○

पाँच बरस में मैंहीं जी कें, मुण्डन होलों छेलै।
तखनी तक तें मैंहीं हरदम, गरदा धूलें खेलै।। १॥

सात बरस के होलै जखनी, धरहरा स्कूल आबी।
शिक्षा खातिर नाम लिखाबै, अवसर बढ़िया पाबी।। २॥

रामानुग्रह नामों सें ही, शुरू करलकै पढ़ना।
इनका कैथी साथ फारसी, आगू छेलै बढ़ना।। ३॥

एक समाजित सिंह शिक्षकें, आबी रोज पढ़ाबै।
अंग्रेजी हिसाब के शिक्षा, अपन्है घर पर पाबै।। ४॥

ग्राम पाठशाला के शिक्षा, खतम करलकै जहिया।
जाय पूर्णियाँ जिला स्कूल में, नाम लिखाबै तहिया।। ५॥

वर्ग आठवाँ सें ग्यारह तक, पूरा वहीं पढ़लकै।
पढ़थैं–पढ़थैं योग–साधना, केरों ज्ञान सिखलकै।। ६॥

सब्भे विद्यालय में तखनी, चाहे कोनों कक्षा।
रहै फारसी, उर्दू साथें, अंग्रेजी के शिक्षा।। ७॥

आध्यात्मिक संस्कार जहाँ पर, उनकों अलग समस्या।
सूझें लगलै उनका हरदम, पूजा–पाठ–तपस्या।। ८॥

धर्म परायण बापे छेलै, भक्ति भाव सें भरलों।
रामचरित मानस आगू में, रहै हमेशा धरलों।। ९॥

मानस पाठ हमेशा करतें, देखै मैंहीं जखनी।
अनुराग बढ़ै रामायण सें, दिल–दुनिया में तखनी।। १०॥

उनका आँखी में आँसू भी, देखै पढ़तें–गैतें।
की रहस्य छै ऐमें भरलों, सोचै पीतें–खैतें।।११॥

बाबू जी के नैं रहला पर, मानस रोज निकालै।
ऐतें देखी डरलों झटपट, बक्सा अन्दर डालै।।१२॥

किष्किंधा काण्डों सें पढ़ना, मानस शुरू करलकै।
दोहा–चौपाई याद करी, मन में खूब धरलकै।।१३।

उच्चों कक्षा में ऐलै जब, नैं घबड़ाबै कहियो।
रामायण, सुखसागर, गीता, पढ़थैं रहलै तइयो।।१४॥

शिव कें मानी इष्ट करै नित, ध्यान–तपस्या–पूजा।
शिव शंकर कें छोड़ी आबै, ध्यानों में नैं दूजा।।१५॥

रामानंद नाम के छेलै, साधु–संत अलबेला।
जे कहलाबै दरिया पंथी, घूमै सगर अकेला।।१६॥

उनका सें जप – तप – योगों के, मैंहीं पाबै शिक्षा।
लेलक खुल्ला आँखी वाला, त्राटक केरों दीक्षा।।१७॥

अभ्यासों में मोंन लगाबै, पढ़ना–लिखना छोड़ी।
पाठ्य–पुस्तकों सें भी नाता, मनें देलकै तोड़ी।।१८।

धर्म ग्रंथ में लगन लगाबै, अध्ययन में उदासी।
साधु–संत के संगत लेली, रहै सदा अभिलाषी।।१९॥

भगवानें अपना भक्तों कें, धरती पर जब भेजै।
भक्तो तें भगवानों खातिर, दुनियादारी तेजै।।२०॥

पढ़ना–लिखना छोड़ी निश्चय, करै तपस्या केरों।
यै कामों में कहाँ जरूरत, साथी–संगी–जेरों।।२१॥

चलै पूर्णियाँ सें गंगा तट, तेरह कोस अकेला।
भक्ति–प्रेम के सागर लहरै, पर नैं पास अधेला।।२२।

झूलन दाय बहिन जे छेली, उनकों दुख की कहना।
कोन चूक ईश्वर सुहाग के, छीनी लेलक गहना।।२३॥

विधवा जीवन सदा बिताबै, मैंहीं केरों साथें।
वहीं सँवारै मैंहीं केरों, जीवन अपना हाथें।।२४॥

ख्याल बहिन विधवा के ऐथैं, मैंहीं कानें लागै।
बैरागों के भूत तखनियें, कुछ दिन लेली भागै।।२५॥

गंगा में डुबकी मारी कें, मन कें शांत करलकै।
राह पूर्णियाँ लौटै केरों, मैंहीं तुरत धरलकै।।२६॥

तलबा बीच फफोला निकलै, पैदल चलतें–चलतें।
वापस आबै ठीक समय पर, सूरज ढलतें–ढलतें।।२७॥

कुछ दिन केरों बाद वेग के, दौर दोसरों चललै।
पूज्य पिता कें खबर मिलै तें, उनका पूरा खललै।।२८॥

पहुँची गेलै शहर पूर्णियाँ, मैंहीं कें समझाबै।
अपना साथें उनका फेनूँ, अपना घर लें आबै।।२९॥

वेग तेसरों उमड़ै अहिनों, जंगल चल्लों गेलै।
उपवास करी कें चिन्तन में, लीन जरा सा भेलै।।३०॥

चिन्ताकुल मनमें शांति कहाँ, झूठे मन भरमाबै।
पछतैलों–पछतैलों लौटी, आवासों पर आबै।। ३१॥

फेनूँ इनको निर्णय होलै, गुरु–आश्रम में रहना।
गुरु सेवा में तल्लीन रही, सुख–दुख सब्भे सहना।। ३२॥

छोड़ पूर्णियाँ भागै केरों, खबर पिता कें मिललै।
गुरु–आश्रम में पाबी लेकिन, कली हृदय के खिललै।। ३३॥

पुत्र–प्रेम जतलाबै पूरा, बैठी कें समझाबै।
तुरत पूर्णियाँ अपना साथें, लौटैनें लें आबै।। ३४।

इनकों रहै विचार हमेशा, अच्छा तालिम पाबै।
अच्छा तालिम के बल–बूतें, अच्छा धोंन कमाबै।। ३५॥

पर मेँहीं जी चाहै छेलै, भगवद् भक्ति कमाबौं।
एकान्त साधना में बैठी, हरि गुण केवल गाबौं।। ३६॥

विद्यालय में तीन परीक्षा, निश्चित छेलै होना।
तिमाही, अर्द्धवार्षिक, वार्षिक, सबकें छेलै ढोना।। ३७॥

ईस्वी उन्नीस सौ चार के, बोलौं बात यहाँ पर।
त्रैमासिक नैं होलै तखनी, मेँहीं पढ़ै जहाँ पर।। ३८।

तीन जुलाई निश्चित होलै, अर्द्धवार्षिक परीक्षा।
मेँहीं तें दुसरे कामों के, लेनें छेलै दीक्षा।। ३९।

○○○

सर्ग–3

दौर अध्ययन केरों जखनी,
मेँहीं रहलै सदा सुपात्र।
सब्भैं जानै पढ़ै–लिखै में,
मेँहीं जी छै बढ़िया छात्र।। (१)

समय परीक्षा के जब ऐलै,
मेँहीं तें होलै तैयार।
सोची–समझी खूब लिखलकै,
सब प्रश्नों के उत्तर सार।। (२)

चार जुलाई अंग्रेजी के,
लिखना छेलै जे कुछ शेष।
'बिल्डर' कविता चार पंक्ति के,
व्याख्या के छेलै निर्देश।। (३)

चार पंक्ति अंग्रेजी कविता,
जकरों करना दै गुणगान।
पढ़ी–पढ़ी अनुमान लगइयै,
की छेलै वै में तूफान।। (४)

"For the structure that we raise,
Time is with material's filled,
Our to-day and yeasterday.
Are the bricks with we build?" (5)

व्याख्या लिखतें–लिखतें उठलै,
मन–मंदिर बीचें वैराग्य।
चक्र नियति के कखनी चलतै,
बदली देतै ककरों भाग्य।। (६)

ईश्वर के माया छै अद्‌भुत,
मुश्किल करना लगै बखान।
बचपन सें वैराग्य–भावना,
के करतै केना अनुमान।। (७)

उत्तर पुस्तिका के अन्त में,
लिखलक तुलसी के चौपाय।
'देह धरे को यह फलु भाई,
भजिया राम सब काम बिहाय।।'(८

ईश भक्ति के अविरल धारा,
के उठलै मन में संवेग।
प्रभु–सत्ता कण–कण में व्यापित
देखै छेलै डेगे–डेग।। (९)

दुनिया केरों माया बंधन,
झलकें लगलै सब बेकार।
ब्रह्म सत्य,संसारे मिथ्या,
सांसारिक सब कुछ निस्सार।। (१०)

परीक्षा हॉल के वीक्षक लग,
नम्र भाव सें बोलै जाय।
'मे आई गो आउट सर जब,
वीक्षक गेलै कुछ घबड़ाय।। (११)

वीक्षक कें की मालूम रहै,
मेँहीं के दिल के आवेग।
वीक्षक मुँह सें सुनथैं 'जाओ',
मेँहीं तुरत बढ़ावै डेग।। (१२)

पत्नी सें आदेश यही रङ्,
गौतम लें कें घर सें जाय।
राह वहें वीक्षक सें पूछी,
मेँहीं भी लेलक अपनाय।। (१३)

मानव जीवन सफल बनावें,
करें पूर्ण ज्ञानों के खोज।
अनजानी राहों पर हरदम,
बढ़थैं रहलै रोजे–रोज।। (१४)

उलटी कें नैं ताकै कखनूँ,
हरदम आगू बढ़ले जाय।
बीहड़–जंगल अगर मिलै तें,
बैठी केन्हों रात बिताय।। (१५)

सदा–सदा के लेली होलै,
विद्यालय शिक्षा के अन्त।
मेंहीं बाबा चलें लागलै,
जेना सब्भे साधु–सन्त।। (१६)

जंगल–जंगल, पर्वत–पर्वत,
खोजै मेंहीं सद्गुरु सन्त।
सद्गुरु मिलना बड़ा कठिन छै,
खोज करों जीवन पर्यन्त।। (१७)

○○○

सर्ग–4

चार जुलाई जीवन में सें,
त्यागै सदा परीक्षा कें।
परम ब्रह्म में मोंन रमाबै,
छोड़ी आगू शिक्षा कें।। (१)

दार्जिलिंग के ओर निकललै,
बढ़तें, रहलै शाम तलक।
किशनगंज में घुमतें देखै,
एक पुलिस जब एक झलक।। (२)

आदर सें बोलाबै उनका,
भोजन भी करबाबै छै।
पर खैतें भोजन में मरलों,
नजर पतिंगा आबै छै।। (३)

मेंहीं बाबा ऊ भोजन कें,
कुत्ता आगू फेकै छै।
पुलिस कर्मचारी चिन्ता में,
ई घटना जब देखै छै।। (४)

चूड़ा–दही खिलाबै खातिर,
सब्भे फेनूँ बोलै छै।
ईश्वर के इच्छा जानी नैं
बाबा के मन डोलै छै।। (५)

ब्रह्म मुहूर्त जखनियें छेलै,
बाबा आगू बढ़लों छै।
जठरानल उत्पात मचाबै,
सूरज माथा चढ़लों छै।। (६)

आम वृक्ष के नीचें गिरलों,
फलाहार लें देखै फल।
फलाहार सें भूख मिटाबै,
पीलक फेनूँ ठंडा जल।। (७)

एगो छाता पुंजी उनकों,
उनका हाथें पड़लों छै।
भक्ति भाव के शीतल छाया,
दैलें आगू बढ़लौ छै।। (८)

उनका देहों पर छै धोती,
मन उमंग सें भरलों छै।
पिन्हनें छै खाली लंगोटी,
संकल्पो कुछ करलों छै।। (९)

एक साधु राहों में मिललै,
बात पुछै घरछानी कें।
की–की छै संकल्प हृदय में,
खुश होलै सब जानी कें।। (१०)

आगू में आबी संन्यासी,
बोलै प्रभु के गान करों।
बच्चा तों पुत्र भवानी के,
कुछ्छू अपनों दान करों।। (११)

उनका जिम्मा खाली छाता,
वोहो ठो दान करलकै।
हाथ जोड़ी साधु–संतों कें,
आगू के राह धरलकै।। (१२)

वस्त्र दान कुछ होना चाही,
साधु कहै छै छेकी कें।
कंधा पर के धोती दै छै,
साधु दंग छै देखी कें।। (१३)

धोती तब लौटाबें लगलै,
बाबा नैं स्वीकार करै।
की लीला छै उनकों जौनें,
सबके नैया पार करै।। (१४)

उल्टी कें देखै छै पीछू,
दूर जरा सा गेला पर।
नैं झलकै तें मन–मन सोचै,
ईश–कृपा छै चेला पर।। (१५)

साधु रहै परमेश्वर जानों,
बात बड़ी अलबत्ता छै।
धरती के कोना–कोना में
सचमुच उनके सत्ता छै।। (१६)

ठेकेदार रहै आगू जे,
दरिया पंथी कहलाबै।
एक रात मेंहीं वोही ठाँ,
अपना मन कें बहलाबै।। (१७)

ठाकुरगंजें एक दरोगा,
बाबा मन कें लै जीती।
वहीं प्रेमवश समय कीमती,
दस–दस दिन गेलै बीती।। (१८)

उक्त दरोगा के सलाह सें,
रिविलगंज तक आबै छै।
रामानन्द पहिलकों गुरु कें,
आश्रम बीचें पाबै छै।। (१९)

रिविलगंज दू–चार महीना,
गुरुवर साथ बिताबै छै।
जोतरामराय फनूँ गुरु के,
साथें, साथें आबै छै।। (२०)

लगभग छह सें सात महीना,
वहीं बिताबै साथों में।
मन तें पहिन्हें देनें छेलै,
गुरुवर केरों हाथों में।। (२१)

○○○

सर्ग–5

चार रे जुलाई जबें परीक्षा भवनमा सें,
मेंहीं नाहीं आबै घरें, सुनों श्रोता भइया।
पिता बबुजन गिरै भूमि पर मुरझाई,
चिन्ता के समुद्र डूबै सुनों श्रोता भइया।
खोजै छै भवनमा में, खेतें खलिहनमा में,
लागै नाहीं टेर काहीं, सुनों श्रोता भइया।
गेलै जहाँ आसों पर, शिक्षक आवासों पर,
रहलै निराशों पर, सुनों श्रोता भइया। (१)

नद्दी नाला पार भेलै, जोतराम राय गेलै,
देखी कें प्रसन्न भेलै, सुनों श्रोता भइया।
पिता जी कें देखै जबें, माथा टेकै आबी तबें।
गुँरु कें बताबै बात, सुनों श्रोता भइया।
वैरागों सें मुक्ति पैतै, घरें केना लौटी जैतै,
सोचै राजी करै के उपाय श्रोता भइया।
रहै तांत्रिक बंगाली, गल्ला में रूद्राक्ष खाली,
ओकरा सें अरज सुनाबै श्रोता भइया। (२)

हमरा अपार धनें, पुत्रों लें बेचैन मनें,
पुत्रों कें लौटाबै लेली कहै श्रोता भइया।
लाख समझाबै छेलै, ममता देखाबै छेलै,
पर नैं डिगाबै मनें, सुनों श्रोता भइया।
रामों के भजनमा में, स्वामी के शरणमा में,
रहै के आसीस माँगै, सुनों श्रोता भइया।
पिता जी तें हारी–पारी, आबी गेलै घर–द्वारी,
पुत्रों के तें ममता छै जारी श्रोता भइया। (३)

स्वामी रामानंद जहाँ, माता एगो रहै वहाँ,
उनकों बचन बड़ी भावै श्रोता भइया।
माता केरों प्रवचन, सुनै सब ज्ञानी जन,
अरथ बुझाबै सब भारी श्रोता भइया।
सुनी–सुनी गुरुवाणी, माता कें काविल जानी,
रामानंद स्वामी बिसराबै श्रोता भइया।
मेँहीं के विवेक जागै, संतों कें खोजै में भागै,
दरिया पंथी कें त्यागै सुनो श्रोता भइया। (४)

❍❍❍

सर्ग–6

स्वामी रामानन्दों लेगाँ,
पत्र एक ठो आबै छै।
पूज्य पिता जी के पत्रों में,
प्यार हमेशा पाबै छै।। (१)

लिखै पिता जी सिकलीगढ़ सें,
दूर जरा सा जानी लें।
चम्पानगर बनैली ड्योढ़ी,
आना छै ई ठानी लें।। (२)

ठाकुर कृष्ण सिंह षट्शास्त्री,
वै ड्योढ़ी में ऐलों छै।
दर्शन लेली दर्शक केरों,
जमघट पूरा छेलों छै।। (३)

हम्हूँ यहीं सें सीधे जैबै,
तहूँ वहीं पर आबी कें।
अपनों जीवन धन्य बनाबों,
उनकों दर्शन पाबी कें।। (४)

पिता–पुत्र दोनों तब ऐलै,
समय सुदिन, शुभ जानी कें।
दर्शन सें मन तृप्त करलकै,
ईश्वर उनका मानी कें।। (५)

दर्शन के उपरान्त वहाँ पर,
कुछ पण्डित कें देखै छै।
मेँहीं जी कें बच्चा जानी,
आगू आबी छेकै छै।। (६)

कर्ज देव ऋण, पितृ ऋण, ऋषि ऋण,
तोरा पर तीनों बाँकी।
अभी देव ऋण बिना चुकैनें,
स्वर्ग कहाँ राखों टाँकी।। (७)

मेँहीं बाबा विवाद–छोड़ी,
कहै स्वर्ग नैं अभिलाषा।
सिर्फ परम पद पाबै केरों,
राखै छी जोगी आशा।। (८)

पंडित बोलै मातु पिता के,
कर्जा माथा ऊपर छै।
कहाँ स्वर्ग के बात यहाँ पर,
शरण जरा नैं भू पर छै।। (९)

सब्भे बातें 'यथार्थ' बोलै,
षट्शास्त्री जी संन्यासी।
बबुजन लाल जरा सा पूछै,
रहै शान्त जे मृदुभाषी।। (१०)

सब्भे बात यथार्थें होतै,
जरा समझ नैं आबै छै।
षट्शास्त्री जी हँसी–हँसी कें,
सब्भे अर्थ बुझाबै छै।। (११)

कहै पिता श्री मेंहीं जी सें,
त्याग घरों के करना छौं।
यै बातों ले तोरा कखनूँ,
हमरा सैं नैं डरना छौं।। (१२)

एक बार आग्रह मानी कें,
साथें अपनों गाँव चलों।
जै गाछी तर बैठै छेल्हो,
ऊ गाछी के छाँव चलों।। (१३)

पास–पड़ोसी परिजन सबसें,
मिली–जुली कें अइहों तों।
फेनूँ गुरु सेवा सें अपनों,
जीवन सफल बनइहों तों।। (१४)

मानी कें आदेश पिता के,
मिललै सबसें गामों में।
कुछ दिन रहलै फेनूँ ऐलै,
लौटी गुरु के धामों में।। (१५)

गुरुधामों में 'सारशब्द' के,
चर्चा रोजे होना छै।
पर नैं समझै मेंहीं, ऐमें,
कहिनों जादू टोना छै।। (१६)

'सारशब्द' कें समझै लेली,
धरकंधा दिस आबै छै।
काढ़ागोला में गुरुभाई,
लेगाँ रात बितावै छै।। (१७)

धरकंधा में सारशब्द के,
चर्चा नैं छै जानी कें।
नासरी गंज तुरत पधारै,
मिलतै कुछ्छू मानी कें।। (१८)

पाठ करै जौनें वोही ठाँ,
चतुरानंद उचारै छै।
ई शब्दों पर महन्त लेकिन,
कुछ्छू कहाँ विचारै छै।। (१९)

पूछै अर्थ चतुरानन्द के,
मेँहीँ संतों सें जखनी।
सब्भे बोलै झटपट ब्रह्मा,
चिन्ता में मेँहीँ तखनी।। (२०)

चतुरानंद नहीं 'चतुरानन',
मेँहीँ बाबा बोलै छै।
पाठ करै वाला भी लज्जित,
सब्भै के मन डोलै छै।। (२१)

बलिया ऐलै मेँहीँ बाबा,
संतुष्ट वहूँ नैं होलै।
लगै कर्मचारी बैठाँ के,
बाते कुछ टेढ़ों बोलै।। (२२)

चुट्टी काटै महाराज जी!
अंग्रेजी के छात्र अहाँ।
कोन किताब पढ़ी कें योगी,
पैल्हें ई प्रेरणा कहाँ।। (२३)

अंग्रेजी के पुस्तक पढ़लौं,
'ऑल मेन मस्ट डाय' कें।
मेँहीँ बाबा सब लोगों कें,
सुझाबै छै समझाय कें।। (२४)

'सारशब्द'के अर्थ खोजनें,
पहिनें तें ऐलै बलिया।
आरा, बिहटा, होलों छपरा,
पीछू छोड़ी मेघरिया।। (२५)

महावीर जी छपरा केरों,
एक माह उनका पासें।
सत्संगों में वहीं बिताबै,
'सारशब्द' केरों आसें।। (२६)

पुनः जोतरामराय आबै,
स्वामी रामानंदों लग।
चलतें--चलतें थकलों छेलै,
आगू कैसें बढ़तै पग।। (२७)

'सारशब्द' के अर्थ हमेशा,
पूछै रामानंदों सें।
जे छेलै ज्ञानी अलबत्ता,
आश्रम के सुखकंदों सें।। (२८)

पर आश्रम के स्वामी बिगड़ै,
कुछ्छू कहाँ बताबै छै।
मेँहीँ मन मारी कें बैठै,
हरि गुण खाली गाबै छै।। (२९)

○○○

सर्ग–7

अगर इरादा राखोॅ पक्का, मिलतै झट भगवान।
खोज करै में जे घबड़ाबेॅ, नैं होतै इन्सान।। १॥

गुरु रामानंदोॅ के आश्रम, सुख–समृद्धि के वास।
मैंहीं दास सम्हारी राखै, कागज–पत्तर खास।। २॥

हिनियें आश्रम केरोॅ सब्भे, लानै–भेजै डाक।
डाकघरोॅ में दू सत्संगी, जकरोॅ पूरा धाक।। ३॥

रामदास जी रोजे भेटै, कागज लेनें हाथ।
रहै पोस्टमास्टर हुनियें, अध्यापक के साथ।। ४॥

धीरज लाल गुप्त जी छेलै, रामदास के मित्र।
दोनों केरोॅ जोड़ी देखै, सब्भैं बड़ा विचित्र।। ५॥

सबपोस्टमास्टर हुनियों रहै, काढ़ा गोला डाक।
विद्यालय के अध्यापक भी, रहभेॅ सुनी अवाक।। ६॥

दोनों आध्यात्मिक विचार के, दोनों पूरा सन्त।
सत्संगोॅ में देखौ जौनें, दोनों लगै महन्त।। ७॥

परम संत देवी साहब के, दोनों छेलै भक्त।
दोनों के धमनी में लागै, एक्के छेलै रक्त।। ८॥

छल प्रपंच सें दूर हमेशा, दोनों बिल्कुल शान्त।
सत्संगोॅ के चर्चा छेड़ै, जहाँ मिलै एकान्त।। ९।

धीरज लाल गुप्त सें पूछै, मेँहीँ बाबा बात।
कहोॅ संतमत छेकै की जे, चर्चा छै दिन–रात।।१०॥

धीरज लाल गुप्त जी बोलै, मेँहीँ कें समझाय।
लागै छै जल्दी ही हमरोॅ, बनभेॅ तोॅ गुरुभाय।। ११॥

संसारोॅ के सब्भे संतोॅ के जे रहै विचार।
वहेॅ 'सन्तमत' छेकै जानोॅ, मानै छै संसार।।१२॥

आबोॅ सत्संगोॅ में आबोॅ, पूरा होथौं ज्ञान।
सत्संगें ही दूर करै छै, लोगोॅ के अज्ञान।।१३॥

धीरज लाल गुप्त के मानी, मेँहीँ बाबा बात।
सत्संगोॅ में मोंन रमाबै, सुबह–शाम, दिन–रात।। १४॥

सत्संगोॅ में बैठी पीयै, संतमतोॅ के घूँट।
तब देवी साहब जी के प्रति, श्रद्धा हुवै अटूट।। १५॥

गुप्ता जी सें व्यक्त करलकै, दर्शन केरोॅ आस।
गुप्ता जी झट पत्र लिखलकै, देवी साहब पास।।१६।

हिन्नें मैंहीं बाबा छेलै, दर्शन लें बेताब।
हुन्नें देवी बाबा साहब, घुमै रहै पंजाब।।१७॥

गुप्ता जी के पत्र लिखलका, रामदास जी पाय।
देवी बाबा आगू आबी, बाँचें लगलै भाय।।१८॥

वै पत्रों में मैंहीं बाबा केरों अंकित चाह।
सद्गुरु बाबा देवी दर्शन केरों खोजै राह।।१९॥

चिट्ठी पर तें देबी बाबा, रहै लगैनें ध्यान।
पर उनकों भावों के कुछ्छू, नैं लगलै अनुमान।। २०॥

मगर दोसरे दिन घबड़ैलों, बाबा बोलै बात।
मैंहीं लाल कहाँ छै जकरों, चिन्ता होलै रात।। २१॥

फेनूँ देवी बाबा बोलै, विजया दशमी रोज।
जैबै जब भागलपुर करबै, मैंहीं केरों खोज।। २२।

रामदास चिट्ठी भेजी कें, धीरज कें समझाय।
मैंहीं बाबा देखी चिट्ठी, हर्खित होलै भाय।। २३॥

पर मैंहीं केरों विह्वलता, दिन-दिन बढ़ले जाय।
धीरज लाल गुप्ता कें अपनों विह्वलता बतलाय।। २४॥

राजेन्द्रनाथ रहै निवासी, भागलपुर के खास।
धीरज लालगुप्त जी लानै, मैंहीं उनका पास।। २५॥

मैंहीं बाबा भी उनका सें, भजन-भेद कर प्राप्त।
मिरजानों में बैठी रहलै, भजन-भेद में आप्त।। २६।

आबी रहै धरहरा कुछ दिन, पूज्य पिता के ग्राम।
तब तक विजया दशमी ऐलै, लें कें खुशी तमाम।।१७॥

ठीक समय पर मैंहीं बाबा, ऐलै मायागंज।
देखै देवी बाबा केरों, मुख-मंडल नव कंज।।१८॥

सद्गुरु देवी बाबा केरों, चरण गहै तत्काल।
लालायित छेलै जे होलै, दर्शन करी निहाल।।१९॥

दीक्षा गुरु राजेन्द्र नाथ जी, लानै मैंहीं साथ।
देवी बाबा के हाथों में, सोंपी दैछै हाथ।।२०॥

यक्षलोक सें रामचन्द्र कें, जैसें विश्वामित्र।
वैसें देवी बाबा देखै, वर्णन बड़ा विचित्र।।२१।

मैंहीं बाबा जन्नें-तन्नें, घूमै रहै अनाथ।
देवी बाबा चरण गही कें, होलै आज सनाथ।।२२॥

○○○

सर्ग–8

यै बारी भागलपुर आबी,
बाबा रहलै दू सप्ताह।
दर्शन पाबी मेँहीँ बाबा,
के मन में भारी उत्साह।। (१)

देवी बाबा साथें–साथें,
गेलै हिनी मुरादाबाद।
तत्पर रहतें सेवा में नित,
लेतें रहलै आशीर्वाद।। (२)

भागलपुर में देवी बाबा,
पूछै मेँहीँ जी सें बात।
'पहिनें तोरों कोन साधना,
में बीतै छेलै दिन–रात।।' (३)

'गुरु मंत्रों के जाप हमेशा,
त्राटक साथें गुरु पर ध्यान।'
बाबा पूछै 'गुरु रूपों के,
होलै कहिनों मन अनुमान।।' (४)

मेँहीँ बाबा बोलै फेनूँ,
'साफ–साफ नैं घुँघला रंग।
लागै उनका चरणों लोटी,
समय बिताबौं उनका संग।।' (५)

देवी बाबा बोलै कैसें,
आगू जीयै केरों मोंन।
स्वावलम्बी चाहें मधुकरी
(तुलसी सिस्टम) में सें कोन।। (६)

मेँहीँ बाबा केरों छेलै,
वृत्ति मधुकरी पर ही जोर।
देवी बाबा हँसी–हँसी कें,
सीनें राखै अपनों ठोर।। (७)

बाबा साहब भागलपुर सें,
आगू पहुँचै छै मुंगेर।
छपरा, बलिया,गाजीपुर में,
कन्हौं कहाँ रूकै छै ढेर।। (८)

सबके साथें गोरखपुर सें,
आबै तुरत मुरादाबाद।
मेँहीँ बाबा साथें ऐलै,
मिटलै मन के कुछ अवसाद।। (९)

मुरादाबाद सत्संगों में,
नानक जी वाणी के पाठ।
तुमने क्या समझा पुछला पर,
मेँहीँ बाबा होलै काठ।। (१०)

देवी बाबा धिक्कारै छै,
फटकारै छै आँख दिखाय।
फेनूँ वैठाँ के लोगों कें,
बोलैछै बढ़िया समझाय।। (११)

पढ़ना–लिखना साथ पिता कें,
छोड़ी ऐलै संतों संग।
डाँट–डपट सें योग्य बनैबै,
सब्भे होतै देखी दंग।। (१२)

देबी बाबा कें नैं मानों,
भूल्हौ सें तों खीरा रंग।
उनकों तुलना होबो करतै,
जहाँ नारियल केरों संग।। (१३)

देवी बाबा साथें रहलै,
मेंहीं बाबा पूरा माह।
सत्संगी सागर में डूबी,
पाबें चाहै हरदम थाह।। (१४)

एक दिनाँ गुरु शिष्य समेते,
एक स्थानें रहै एकत्र।
यही बीच बबुजन बाबू के,
ऐलै बाबा लेगी पत्र।। (१५)

पत्रों में आग्रह बाबा सें,
मेंहीं भेजो हमरा पास।
घर में बैठी करतें रहतै,
नित्य भजन–साधन–अभ्यास।। (१६)

बाबा बोलै मेंहीं जी सें,
'भजन साथ कुछ करना काम।'
काम किये बिन कभी भूलकर,
भोजन का मत लेना नाम।। (१७)

पिता तुम्हारे पत्र भेजकर,
दिखलाये हैं पूरा प्यार।
घबड़ाने की बात नहीं है,
चलता है ऐसे संसार।। (१८)

ऐलै लौटी घर जब मेंहीं,
छूवै पूज्य पिता के गोड़।
गामों के वातावरणों में,
ऐलों लागै पूरा मोड़।। (१९)

वहीं बनै सत्संग भवन भी,
गामों के पूरा सहयोग।
वैठाँ आबी सत्संगी सब,
करै ध्यान नित आरू योग।। (२०)

मेँहीँ बाबा एकवार ही,
भोजन के करलक अभ्यास।
पर कमजोरी के तन–मन में,
होलै थोड़ा सा आभास।। (२१)

डॉक्टर साहब के सलाह पर,
बाबा देलकै नियम तोड़।
मुरादाबाद गुरु के दर्शन,
लेली चललै आश्रम छोड़।। (२२)

गामों के सत्संगी ढेरी,
आगू–पीछू होलै साथ।
उमड़ी पड़लै मेँहीँ बाबा,
बनै अनाथों केरों नाथ।। (२३)

कुशल क्षेम पूछी कें पूछै,
बाबा प्रेम–दया के धाम।
'अन्न ग्रहण करने के पहले,
किया पिता जी का कुछ काम'।। (२४)

बाबा बोले 'पूज्य पिताजी,
नहीं दिये कुछ करने काम।
भजन–भाव–सत्संग बिताया,
अपना पूरा आठो याम।।' (२५)

'मुफ्त अगर भोजन पावोगे,
होगा तेरा खून खराब।
अन्न पिता जी का भी होगा,
तब भी मन में पूर्ण दुराव।। (२६)

बिना मेहनत भोजन करना,
यह भी समझो है अपराध।
भटकौगे तुम सही मार्ग से,
पूर्ण न होगा तेरा साध।।' (२७)

देवी बाबा पूरा देलक,
अति सुन्दर पावन उपदेश।
मेँहीँ बाबा सुनलक जैसें,
गुरु वशिष्ठ केरों अवधेश।। (२८)

मेँहीँ बाबा चलै धरहरा,
बाबा केरो लें आदेश।
पहुँची गेलै आश्रम अपनों,
दिन कें कुछ रहतें ही शेष।। (२९)

जोतरामराय गाँव में ही,
ठानै छै पहिलों सत्संग।
चन्दा लेली घूमै बाबा,
छिड़लै वहाँ बात के जंग।। (३०)

पंडित एक वहाँ पर बोलै,
ईश्वर का बस लेना नाम।
धर्म–कर्म को भी अपनाना,
यह तो है ब्रह्मण का काम।। (३१)

पेशा अपना छोड़ कहाँ से,
उल्टा करते धर्म प्रचार।
हिंसा यह भी कहीं छीन लो,
अगर दूसरों का अधिकार।। (३२)

बाबा बोलै पंडित जी सें,
'सचमुच ब्रह्मण का यह काम।
पर खाली गद्दी को देखा,
बैठ गया प्रभु का ले नाम।। (३३)

पहले था जो काम आप का,
मैं करता हूँ अब वह काम।'
उत्तर सुनथैं पंडित भागै,
नैं ऐलै फेनू ऊ ठाम।। (३४)

अधिवेशन के बाद धरहरा,
ऐलै बाबा अपनों ग्राम।
बसै धरहरा एक साधु जे,
कहै श्याम सुन्दर निज नाम।। (३५)

चलै पता नैं कहिनें हरदम,
बात करै वें भरलों स्वार्थ।
करै घोषणा हम्में करबै,
मेँहीँ बाबा सें शास्त्रार्थ।। (३६)

विजय–पराजय लेली राखै,
रुपया–पैसा केरों शर्त्त।
साधु वेश धारी खल कामी,
नैं सूझै आगू के गर्त्त।। (३७)

एक दिनाँ सत्संग भवन में,
मारें लगलै जब ललकार।
बाबा आबी कर जोड़ी कें,
मानी लै झट अपनों हार।। (३८)

लालसा पूर्ण करें धरहरा,
नैं जानों की सोची भाय।
ऐलै आरू सत्संगी सें,
बिन मतलब गेलै टकराय।। (३९)

होलै वहाँ पराजित जखनी,
भागै झटपट मुँहकी खाय।
शास्त्रार्थ शब्द सदा–सदा लें,
गेलै जीवन सें भुतलाय।। (४०)

○○○

सर्ग 9

छेलै जब ईस्वी सन बारह,
भागलपुर बाबा आबै छै।
नन्दन साहव साथें छेलै,
सत्संग विधान बनाबै छै।। (१)

पहिलों पहल पूर्णियाँ केरों,
मधुवनी मुहल्ला आबी कें।
तीन दिनाँ सत्संग कराबै,
ईश्वर केरों गुण गाबी कें।। (२)

रहै उपस्थित मेँहीँ बाबा,
सेवा में तन–मन डालै छै।
भोजन–भंडारा भार सकल,
अपनाँ हाथें संभालै छै।। (३)

आगू फिर कटिहार पधारी,
तीन दिन रहै सत्संगों में।
रहै जोतरामराय आबी,
पन्द्रह दिन बड़ी उमंगों में।। (४)

सुबह–शाम सब सत्संगों में,
बैठै आबी–आबी जनता।
मेँहीँ बाबा रसोइया में,
बड़ी दिखाबै अपनों क्षमता।। (५)

सेवा करै कुशलता पूर्वक,
सब्भे ठो काम सम्हालै छै।
लेकिन भूलों सें दाली में,
नीमक दोबारा डालै छै।। (६)

बाबा बोलै लाला हमरों,
की मीट्ठों दाल बनैनें छै।
दूर–दराजों के सत्संगी,
सब बड़ी चाव सें खैनें छै।। (७)

देवी बाबा मेँहीँ जी कें,
कहै लाला बड़ी प्यारों सें।
मेँहीँ बाबा के सब गलती,
बतलाबै बड़ी दुलारों सें।। (८)

भागलपुर के लक्ष्मीपुर में,
सत्संगी सब कें खुश करनें।
आगू गेलै देवी बाबा,
जंगल केरों रस्ता धरनें।। (९)

पर्वत केरों दृश्य मनोहर,
भरलों फल–फूलों सें लागै।
जीव जंगली देखी–देखी,
मिलैनें नजर सबठो भागै।। (१०)

चिड़िया चुनमुन–चुनमुन करनें,
जंगल में शोर मचाबै छै।
मेँहीं बाबा साथें–साथें,
दर्शन केरों सुख पाबै छै।। (११)

एक जगह मेँहीं बाबा जब,
चावल, सब्जी, दाल बनाबै।
लपका चावल केरों कारण,
घी जानी कें ढेर मिलाबै।। (१२)

खाना पर बैठै जब बाबा,
खाली सब्जी–दाले खैलक।
चावल नैं खैला के कारण,
सत्संगी भी समझ न पैलक।। (१३)

संध्या कालें खीर बाँटतें,
मेँहीं सें बाबा बोलै छै।
चावल नैं खैला के भेर्दो,
अपन्हें सब फेनूँ खोलै छै।। (१४)

'आज परोसा तुमने भोजन,
चावल में घी कुछ ज्यादा था।
बाँकी लोगों का भोजन तो,
लगता है बिल्कुल सादा था।। (१५)

ऐसा भेद–भाव के कारण,
मैंने चावल का त्याग किया।
सत्संगी में भेद न करना,
अत्युत्तम मानों सीख दिया।। (१६)

मानव–मानव एक हमेशा,
है एक खून सबके नस में।
भेद करेगा, पछतायेगा,
निश्चय वाधा होगा यश में।।' (१७)

मेँहीं बाबा बोलै 'गुरुवर,
मेरा दिल जरा न काला था।
चावल गीला ना हो जाये,
घी सब में समान डाला था।।' (१८)

सुनथैं बाबा चिन्तित होलै,
'पहले गर बता दिया होता।
यह बढ़िया भोजन पाने का,
अवसर मैं कभी नहीं खोता।।' (१९)

रहै वभनगामा बाँका में,
आगू करनें सत्संग वहाँ।
माया गंज सत्संग मंदिर,
तब ऐलै आना रहै जहाँ।। (२०)

धन्य भाग्य ऊ शिष्यों केरों,
जे गुरु संगे समय बिताबै।
गुरु के सेवा करै निरंतर,
साथें बैठी हरि गुण गाबै।। (२१)

○○○

सर्ग–10

माया केरों नै छै छाया,
कहलाबै छै मायागंज।
जहाँ बसै छै संन्यासीगण,
सब छै हर्खित नैं छै रंज।। (१)

कुप्पाघाटों केरों महिमा,
की कहियों जे स्वर्ग समान।
खोजी–खाजी शब्द निकाली,
बैठी गेलौं करें बखान।। (२)

देवी बाबा, मेँहीँ बाबा,
सब बाबा के अलग विधान।
सबकें मिललों छै दुनिया के,
ढेरी देशों में सम्मान।। (३)

देबी बाबा एकांतों में,
बैठी–बैठी करै विचार।
'सेवा के फल मेवा पैतै,
जे करतै सेवा सत्कार।। (४)

मौसम बड़ा सुहाना छेलै,
हवा चलै मौसम अनुरूप।
सूरज कें मेघें दाबी लै,
निकलै फेनूँ ठाम्हैं धूप।। (५)

आँख मिचौनी देखी–देखी,
बाबा के मन में उल्लास।
मैंहीं जी कें करै इशारा,
आबै लें झट अपना पास।। (६)

मैंहीं बाबा दौड़ी आबै,
देखी बाबा के संकेत।
चरणों में लोटी बाबा के,
चरण धूल झटपट सिर लेत।। (७)

बाबा बोलै 'सुनो वत्स तुम,
पहले करके गंगा स्नान।
मिलो अकेले ही कमरे में,
जहाँ रहे बिल्कुल सुनसान।।' (८)

बाबा साहब के आज्ञा सें,
मैंहीं बाबा करलक स्नान।
लेनें फूल, प्रसाद हाथ में,
ऐलै झटपट समुचित स्थान।। (९)

परमात्मा प्राप्ति के सद्युक्ति,
सुरत–शब्द–योगों के ज्ञान।
बतलाबै मैंहीं बाबा कें,
जकरा सें संभव कल्याण।। (१०)

ऊ साधक कर्त्तें खुशकिस्मत,
जकरा बाबा खुद बोलाय।
सुरत–शब्द–योग साधन विधि,
दै छै क्षण भर में बतलाय।। (११)

बड़का–बड़का ऋषि–मुनि गण कें,
नादानुसंधान के ज्ञान।
संभव नैं छै होना जानों,
रहै लगैनें सब दिन ध्यान।। (१२)

संतों में सूरत–शब्द–योगे,
कराबै नादानुसंधान।
वहें संत पारंगत होतै,
जकरा ई योगों के ज्ञान।। (१३)

मेंहीं बाबा के खुशियाली,
कौनें करतै यहाँ बखान।
उनका भी तें ई प्रसाद के,
नैं छेलै अखनी अनुमान।। (१४)

आगू बाबा राह दिखाबै,
''दृष्टि योग' का ही अभ्यास।
करते रहना दस वर्षो तक,
पूरी होगी तेरी आस।। (१५)

मैंने भी बत्तीस बरस तक,
दृष्टि योग रक्खा अपनाय।
इसकी मजबूती से होगा,
पूर्ण काम सुनलो चितलाय।। (१६)

अभी बताया है इस खातिर,
पास रहेगा यह भी ज्ञान।
जिसके खातिर कष्ट उठाया,
दिल में पूरा था तूफान।। (१७)

साथ हमेश रहते–रहते,
समझ रहा था तेरी चाह।
फिक्र नींद की जरा नहीं थी,
भूख–प्यास की ना परवाह।।' (१८)

बाबा के प्रसाद पाबी कें,
मेँहीँ बाबा कें संतोष।
सिद्धि खातिरें भटकै केरों,
नैं रहलै मन में अफसोस।। (१९)

शब्द साधना विधि के लेली,
लगलों रहै हमेशा लग्न।
बाबा साहब स्नेह–सिंधु में,
मेँहीँ बाबा आज निमग्न।। (२०)

जीयै केरों ढंग मधुकरी,
मेँहीँ बाबा केरों मोंन।
जखनी देवी बाबा जानै,
नैं राखै बातों कें गौंन।। (२१)

संन्यासी के बीच बताबै,
झिड़कै, बोलै गन्दा काम।
उत्तम समझों पेटों लेली,
मेहनत करी चुवाबों घाम।। (२२)

साधु–संत कें भिक्षाटन में,
देखी–देखी बदलै मोंन।
काम करै में समय बितैबै,
अरजै में रहबै नित धोंन।। (२३)

कोन समय में कैसें करबै,
ईश्वर के हम्में गुणगान।
अर्जन करतें जीवन जैतै,
दूर रही जैतै भगवान।। (२४)

सद्गुरु पाबै लेली जखनी,
भटकै छेलै रही उपास।
फलाहार नैं संभव छेलै,
जलाहार पर खाली आस।। (२५)

आगू बढ़ना मुश्किल लागै,
भूखों सें बेचैन शरीर।
बूझै वाला कोय साथ नैं,
मेँहीँ बाबा केरों पीर।। (२६)

अपनों सुधा तृप्ति के लेली,
सोचै भिक्षाटन के बात।
भूखें–प्यासें कहाँ चमैतै,
कैसें कटतै अब दिन–रात।। (२७)

पहुँची गेलै दरवाजा पर,
भीखों लें फैलाबै हाथ।
एगो बृद्धा पुत्र शोक में,
कानै–कल्पै ठोकै माथ।। (२८)

कुछ दिन पहिनें जकरों बेटा,
चल्लों गेलों छे परलोक।
उनका खातिर नैं छै कुछ्छू,
शेष अगर कुछ छै तें शोक।। (२९)

नजर पड़े मेँहीँ बाबा पर,
बुढ़िया मारै छै फटकार।
करुणा दया जरा नैं तोरा,
तोरों जीवन में धिक्कार।। (३०)

हमरों बेटा लानी दें तों,
तभिये सुनभों तोरों बात।
साधु–संत छेखो सच्चा तें,
दिखलाबों अपनों औकात।। (३१)

मेँहीँ बाबा काँपी गेलै,
देखी कें अहिनों संताप।
सोचें लगलै भीख माँगना,
सबके लेली छै ई पाप।। (३२)

आगू देखों मेँहीँ बाबा,
चललै देवी बाबा पास।
रस्ता में खर्चा के लेली,
लै छै रुपया कर्ज पचास।। (३३)

बाबा के सेवा में रहना,
इनकों छेलै यहें विचार।
देवी बाबा साहव छेलै,
इनका गल्ल केरों हार।। (३४)

बाबा पूछै 'कितने दिन तक,
यहाँ रहोगे मेरे पास।'
मेँहीँ बाबा उत्तर दै छै,
'रहने का मन है छह मास।।' (३५)

देवी बाबा साहब पूछै,
'खर्चा का क्या किया उपाय?'
'पचास रुपया कर्जा लैकें,
ऐलौं दै छै भेद बताय।।' (३६)

बाबा बोलै फटकारी कें,
'तुमने किया है अनुचित काम।
अपने जीवन में कर्जा का,
लेना नहीं दुबारा नाम।।' (३७)

अगर अभी तुम मर जाओगे,
कौन चुकायेगा यह कर्ज।
अभी लौट कर वापस जाओ,
लौटा दो तेरा यह फर्ज।। (३८)

लैलकै मोहलत चारे दिन,
रहबै बाबा के गुण गाय।
लौटी जैबै ग्राम घरहरा,
ठामहें देबै कर्ज चुकाय।। (३९)

बाबा केरों निर्देशों सें,
रहलै बैठाँ, बेपरवाह।
फेनूँ पूछै 'कैसे होगा,
बोलो तो जीवन निर्वाह।।' (४०)

बोलै 'हमरा बाबूजी के,
देलों छै दू बीघा खेत।
हम्में उपजा करी जुटैबै,
भोजन, कपड़ा, दवा समेत।।' (४१)

'इस उपजासे नहीं चलेगा,
तेरे जीवन का सब काम।
करो मेहनत ऐसा जिससे,
झलकेगा पूरा परिणाम।।' (४२)

उसी खेत में बाँस लगाओ,
और लगे केले का बाग।
थोड़ा सा ही लाभ मिलेगा,
अगर लगेगा बैगन–साग।। (४३)

मेँहीँ बाबा सोची बोलै,
'आमद में लगतै दस साल।'
के जानै छै यही बीच में,
लूटी लेतै कखनी काल।। (४४)

सुनथैं डाँटे देवी बाबा,
'सिखलाते हो हमको ज्ञान।
अगर बचौगे सौ वर्षो तक,
क्या खाकर रक्खोगे प्राण।।' (४५)

मिहनत करना, बाग लगाना,
चूनो अपने हाथों घास।
अर्थो की भी अगर जरूरत,
रख लो अस्सी रुपये पास।। (४६)

अगर घटे तो फिर ले लेना,
काम करो हरपल चितलाय।
लौटा देना बाँस–बाड़ी से,
तुमको आमदनी आ जाय।।' (४७)

चौथा दिन जब चलै धरहरा,
मेँहीँ बाबा आशिष पाय।
विदा समय में दू ठो पुस्तक,
देवी बाबा हाथ थम्हाय।। (४८)

बेची कें कुछ काम चलाबै,
के दै छै फेनूँ निर्देश।
आमदनी पर लौटाबै के,
नैं भूलै देना आदेश।। (४९)

मेँहीँ बाबा पहिनें सोचै,
चिन्ता सदा भरै के पेट।
बैलों नाँकी जीवन जीतै,
नैं होतै ईश्वर सें भेंट।। (५०)

देवी बाबा केरों कहना,
'चालीस बरस तक कर काम।'
धन संग्रह इतना कर लेना,
जो कि बुढ़ापे को ले थाम।। (५१)

फिर तो भोजन–भजन–भाव से,
होगा तेरा ही कल्याण।
एकान्त साधना करने से,
पावोगे सद्गति परित्राण।। (५२)

आशिष बाबा केरों लेनें,
मेँहीँ तुरत धरहरा आय।
जीवन के बहुमूल्य समय कें,
दै छै खेती बीच लगाय।। (५३)

पाठ स्वावलम्बन के पढ़ना,
नैं छेलै उतना आसान।
खेती करना मैंहीं बाबा
के लेली होलै वरदान।। (५४)

खेती केरों खर्च जुटाबै,
करलक कुछ अध्यापन कार्य।
आदेशों के पालन लेली,
करलक जे करना अनिवार्य।। (५५)

प्रवचन खातिर मैंहीं बाबा,
जाबें लगलै दूर–दराज।
शेष समय आश्रम में बैठी,
अपनों करै नियोजित काज।। (५६)

○○○

सर्ग–11

पगडंडी केरों बगल, बड़का उगलों कास।
कुहरा आरू ओस सें, लगै नहैलों घास।। १॥

ठिठुराबै सबके वदन, खोजै तिक्खों धूप।
निकलै सूरज के किरण, शोभा परम अनूप।। २॥

मन मोहै मौसम सदा, भरै खेत खलिहान।
नया साल के आगमन, भरलों खेतें धान।। ३॥

उच्चों–टीकर भूमि पर, लम्बा–लम्बा ईख।
सन् तेरह के जनवरी, तेरह ही तारीख।। ४॥

वार्षिक अधिवेशन रहै, जगह रहै कटिहार।
अधिवेशन में भाग लै, बाबा परम उदार।। ५॥

वै अवसर पर धरहरा सें आबै गुरुदेव।
देवी बाबा आसरा, नाव रहै जे खेव।। ६॥

देवी बाबा खूब खुश, दै दै आशीर्वाद।
सत्संगों के बाद जब, चलै मुरादाबाद।। ७॥

भागलपुर आबी कहै, थोड़ों देरी बाद।
मेँहीँ तुम भी साथ में, चलो मुरादाबाद।। ८॥

मेँहीँ बाबा जाय लें, जब होलै तैयार।
'कब तक ठहरौगे वहाँ, बोलो जरा विचार।।' ९॥

बाबा केरों प्रश्न पर, बोलै पूरे माघ।
मेँहीँ बाबा खुश रहै, देखी कें अनुराग।। १०॥

लेकिन कौनें जानतै, विधि के सही विधान।
रहै मुरादाबाद में, तीनें दिन लें जान।। ११॥

देवी बाबा देखि कें, त्रुटि पूर्ण कोय काम।
बिगड़ी गेलै जोर सें, भेजै फेनूँ धाम।। १२॥

आबी गेलै धरहरा, होलै जरा अवाक।
लेकिन कुछ दिन बाद में, ऐलै फेनूँ डाक।। १३॥

बाबा केरों पत्र कें, लै छै अपनों हाथ।
बाबा पूछै 'माघ तक, रहा नहीं क्यों साथ।। १४॥

मेँहीँ बाबा पत्र में, करै क्षमा के मांग।
इनका तें लगलों रहै, बाबा केरों डांग।। १५॥

कई महीना बाद तक, बाबा दै छै ध्यान।
लिखै दोसरों पत्र में, 'दिया क्षमा का दान।। १६॥

जब–जब तेरा मन करे, आओ नि:संकोच।
मेरी बातों पर कभी, नहीं करो कुछ सोच।।' १७॥

क्षमादान के बाद भी, वै सालें दू वार।
दर्शन खातिर पहुँचलै, बाबा के दरवार।। १८॥

आगू निश्चित रूप सें, सालों में इक वार।
दर्शन तें करतें रहै, जाय–जाय दरबार।। १९॥

बाबा पूछै ''कब तलक रहना है इस वार''
सोची कें बोलै समय, पर लागै लाचार।। २०॥

निर्धारित ऊ समय के, पहिने दिन दू–चार।
कैसें कें मालूम नैं, बाबा दै दुत्कार।। २१॥

नैं करनें पूरा समय, बीछें लौटीआय।
बाबा ऊ दुत्कार सें, नैं कहियो घबड़ाय।। २२॥

खाली सोचै जब कभी, जैबै बाबा पास।
लौटै केरों कुछ समय, नैं बतलैबै खास।। २३॥

सन् सोलह में एक दिन, गोरखपुर जब जाय।
देवी बाबा खत लिखै, यहाँ मिलो तुम आय।। २४॥

मेँहीँ बाबा खत पढ़ी, आबै छै नजदीक।
यहाँ रहौगे कब तलक, वहें प्रश्न छै ठीक।। २५॥

मेँहीँ बाबा यै घड़ी, रहलै चुप्पी साध।
देवी बाबा कें लगै, शायद ई अपराध।। २६॥

जाना छेलै जोंन दिन, बाँधी कें सामान।
आज्ञा मांगै जाय कें, जे बाबा के प्राण।। २७॥

बाबा पूछै 'चल दिया, जल्दी में हो लाल।'
'हाँ' कहनें आगू बढ़ै, मेँहीँ जी तत्काल।। २८।।

उत्तर सुनथैं लाल के, मेँहीँ बाबा आय।
बैठै पीठी पर चढ़ी, मन गेलै चकराय।। २९।

'जाने दूँगा मैं नहीं, कह देता हूँ साफ।
लाओ उसको सामने जो कर दे इन्साफ।।' ३०।।

'नैं जैबै बाबा कभी, बातो कोनों टार।
बाबा सें तनियों अलग, नैं हमरों संसार।।' ३१।।

अगला दिन गुरु चरण पर जहाँ झुकाबै माथ।
अब तुम जाओ बोलकर, सिर पर फेरै हाथ।। ३२।।

आज्ञा पाबी धरहरा, वापस बाबा आय।
भजन–भाव–सत्संग में, लै छै मन लपटाय।। ३३।।

○○○

सर्ग–12

जब ईस्वी सन् उन्नीस रहै, रहै जनवरी माह।
झेलै कष्ट अपार मगर नैं, पावै छेलै थाह।। १।।

बड़ा भयंकर फोड़ा निकलै, एक्के नैं दू–चार।
फोड़ा के चलतें ही हरदम, देहें रहै बुखार।। २।।

बाबा लेली बड़ी समस्या, लागै छै गंभीर।
दरदों सें बेचैन हमेशा, दुर्बल खूब शरीर।। ३।।

कच्चा फोड़ा मारै छेलै, लगले ठाम्हैं टीस।
सत्संगी बोलै जब कुछ्छू, बरै रहै झट खीस।। ४।।

बच्चा कें गुदगुदी लगाबों, हँसथों पूरा जोर।
पर कानै वाला बच्चा तें, खूब मचैथों शोर।। ५।।

दरदों सें राहत नैं तनियों, विह्वल छै दिन–रात।
जकरा गोड़ें फटै बियायी, वहीं समझतै बात।। ६।।

ई हालत मेँहीँ बाबा के, जकरा पूरा ज्ञान।
रोग–व्याधि ककरा छोड़ै छै, सोछो दै कें ध्यान।। ७।।

वही समय में भेजै चिट्ठी, 'नंदन' जे गुरुभाय।
लिखलों छेलै बाबा साहब सें मीली लें आय।। ८।।

बाबा साहब हमरा सबसें, खोजै छहूँ बिदाय।
दर्शन लेली जुटी रहल छै, सत्संगी समुदाय।। १।।

हिन्नें मेँहीँ बाबा अपन्हैं, पड़लों छै लाचार।
दरदें तें मजबूर करलकै, मानैं लेली हार।। २।।

अभिलाषा के वेग प्रबल छै, मन में मारै हाय।
मगर आपदा सब्भै केरों, मनसूबा भुतलाय।। ३।।

कुछ दिन बाद फनूँ नंदन के, चिट्ठी ऐलै पास।
मेँहीँ बाबा पढ़तें—पढ़तें, होलै बड़ी निराश।। ४।।

लिखनें छेलै नंदन जी नें, देल्हो तों मटियाय।
बाबा अपनों चोला छोड़ी, कें गेल्हों सिधियाय।। ५।।

सन् उन्नीस केरों जनवरी, उन्नीसे तारीख।
भोरे साढ़े आठ बजे ही, गेल्हौं दै कें सीख।। ६।।

'समय बिताना सतसंगों में, करना नहीं विवाद।
अपना घर अब मैं चलता हूँ, देकर आशीर्वाद।।' ७।।

ऐलों, नैं, ऐलों शिष्यों कें, सबके लें कें नाम।
अपनों कुछ अनमोल वचन जे, दै अंतिम पैगाम।। ८।।

चिट्ठी पढ़थै मेँहीँ बाबा केरों उड़लै होश।
अपनों लाचारी पर तखनी, करै बहुत अफसोस।। ९।।

देवी बाबा के विछोह नें, दै मन कें झकझोर।
नाम रूकै के नैं लै कखनूँ, आँखी केरों लोर।। १०।।

विरह आग के लौ में जरलै, अन्तर्मन के चाह।
मेँहीँ बाबा कें ई दुनिया, लागै बड़ी अथाह।। ११।।

वै दिन सें तब मेँहीँ बाबा, छोड़ी कें प्रोग्राम।
समय बितावै सुमिरन में नित, आरू लै में नाम।। १२।।

ध्यान लगाना चाहै आगू, रहै जगह जे शांत।
बैठें चाहै वही जगह पर, जे बिल्कुल एकांत।। १३।।

धरहरा सत्संग मंदिर सें, आगू कुछ्छू जाय।
ध्यान कूप गंभीर साधना, लेली लै बनवाय।। १४।।

तीन महीना ध्यान साधना में रहलै वै कूप।
दू सत्संगी सेवा खातिर, पावै साथ अनूप।। १५।।

राम लाल जी, श्री महगू कें, होलै अवसर प्राप्त।
तीन महीना दोनों रहलै, गुरु सेवा में आप्त।। १६।।

तीन महीना बाद करै छै, ध्यान—कूप के त्याग।
कमजोरी के कारण छेलै, नैं देहों में लाग।। १७।।

तीन महीना समय बितावै, बैठी कें जे कूप।
ऊ कूपों में तनियों टा नैं, पावै कखनूँ धूप।। १८।।

स्वस्थ रहै के खातिर डॉक्टर, जोड़ी बोलै हाथ।
खुली हवा में टहलों, हठ नैं करों देह के साथ।। १९।।

वै दिन सें सुमिरन में बेशी, समय बितावै रोज।
लेकिन रहलै अन्तर्मन में, सही जगह के खोज।। २०।।

○○○

सर्ग–13

मेँहीँ बाबा परिवारों के,
स्थितियों केरों पूर्ण बखान।
कहीं–कहीं पर होलै जकरा,
लिखलों यहाँ जरूरी जान।। (१)

पहिलों माता फूलमती जे,
नि:संताने स्वर्ग सिधार।
जनकवती के मेँहीँ बाबा,
जिनका जानै छै संसार।। (२)

झूलन दीदी केरों चर्चा,
पहिन्हैं होलों छै विस्तार।
जोनें अपनों सेवा के बल,
बदलै बाबा के संसार।। (३)

दयावती तेसरकी माता,
जकरा छेलै पुत्री चार।
तीन समाबै काल गाल में,
एगो के छैलों परिवार।। (४)

पुत्र चार गो छेलै उनका,
ऊपर सें जे छेलै तीन।
तीनों के बचपन में जानों,
आगू सें लै काले छीन।। (५)

एगो बचलै धरती पर जे,
नाम लिखावै डोमन लाल।
हुनी संतमत के अनुयायी,
छेलै तें बिल्कुल खुशहाल।। (६)

किंकर जी नामों सें जानै,
उनकों यहें बदललों नाम।
अखनी तक हुनियों नैं रहलै,
गेलै अपनों पावन धाम।। (७)

दू ठो खाली परिवारों में,
दोन्हूँ केरों सुन्दर भाव।
मेँहीँ जी में सहनशीलता,
जग कल्याणों केरों ख्वाव।। (८)

वोही ख्वावों कें धरती पर,
दै केरों लेली अंजाम।
मेँहीँ बाबा तन–मन–धन सें,
लगले रहलै आठो याम।। (९)

देवी बाबा ऐ लोकों सें,
चललों गेलै जब परलोक।
कुछछू दिन तक छैलों रहलै,
सबलोगों में पूरा शोक।। (१०)

धर्मे छै जकरों अवलम्बन,
उनकों उत्तम सदा विचार।
पर लोकाचारी में भूलै,
'छेकै ई नश्वर संसार।।' (११)

मैंहीं बाबा चाहें लगलै,
भ्रमणकरी कें करें प्रचार।
दुनिया कें बलताना छेलै,
मानव जीवन केरों सार।। (१२)

सोलहवाँ अधिवेशन जखनी,
टिकैली पूर्णियाँ करवाय।
भ्रमण मंडली गठन करै के,
लैछै बाबा मोंन बनाय।। (१३)

संगठनों में नंदन साहब,
दास हरंगी ध्यानानन्द।
धीरज, मोहन, यदुनाथों सें,
सब कें मिललै परमानन्द।। (१४)

साधु त्रिचनापल्ली (केरल)
वै में छेलै बड़ा उदार।
सच्चा ज्ञानों के खोजों में,
भटकै छेलै द्वारे–द्वार।। (१५)

ज्ञान खोज करनें ऊ गेलै,
दक्षिण सें उत्तर कश्मीर।
वस्त्रहीन देहों के आदी,
खूब सताबै उनका पीर।। (१६)

आगू हुनी धरहरा ऐलै,
करें लगै पूरा सत्संग।
जाड़ा–गर्मी सहतें–सहतें,
बाबा छेलै पूरा तंग।। (१७)

आग्रह करला पर गुरुदेवें,
दै छै भजन–भेद बतलाय।
दू बरसों तक रहै धरहरा,
फेनूँ गेलै केरल आय।। (१८)

भ्रमण मंडली रेलों द्वारा,
ऐलै जहाँ अररिया कोट।
पुलिस इन्सपेक्टर वहाँ मिलै,
जकरा में कुछ छेलै खोट।। (१९)

गोस्सा सें बौवैलों बाबा,
हमरा सब जे लैछी नाम।
ऊ सब्भे बेकारे छेकै,
ऊ सबके नैं कुछ्छू काम।। (२०)

मैंहीं बाबा नम्र भाव सें,
करलक तब पूरा अनुरोध।
'कल के सत्संगों में होगा,
इन तथ्यों का पूरा वोध।।' (२१)

कल के अगला सत्संगों में,
मिललै तब पूरा संतोष।
सूरज के उगला सें हटलै,
घासों पर के सब्भे ओस।। (२२)

करै बहुते प्रश्न आगू में,
सब प्रश्नों के उत्तर पाय।
पश्चात्तापों केरों आँसू,
उमड़ें लगलै आँखी आय।। (२३)

आगू बैतौनी सें होलों,
फारबिसगंज गेलै आय।
कटिहारों होलों भागलपुर,
मिरजानों में धूम मचाय।। (२४)

भ्रमण मंडली के आग्रह पर,
करलक कुछ दिन लेली बन्द।
भ्रमण मंडली हरखित छेलै,
छेलै सबके मोंन बुलन्द।। (२५)

मिरजानों में एक महीना,
सत्संगों के करै प्रचार।
फैली गेलै बाबा केरों,
यश लागै पूरा संसार।। (२६)

चार–पाँच अधिवेशन बाबा,
चार–पाँच जग्घें करवाय।
दीन–हीन आरू जे निर्धन,
भागीदारी सबके भाय।। (२७)

अधिवेशन के बाद मंडली,
घूमें लगलै ग्रामे–ग्राम।
भटगामा, बगहा घूमै में,
छब्बीस व्यक्ति केरों नाम।। (२८)

वहें क्रमों में बाबा चाहै,
ध्यान–साधना–शिविर कराय।
वै शिविरों में साधु–संत कें,
खबर करी लेबै बोलाय।। (२९)

नन्दन साहव मानी गेलै,
बाबा केरों उचित विचार।
ग्राम धरहरा पर ही रहलै,
आयोजन के पूरा भार।। (३०)

वै शिविरों में जुटलै साधक,
ध्यान करै लें जब चालीस।
ध्यान–साधना चलतें रहलै,
जानी लें पूरा दिन तीस।। (३१)

ध्यान–साधना के समाप्ति पर,
दै छै पूरा–पूरा दान।
वै दानों में भरलों छेलै,
देवी बाबा के सम्मान।। (३२)

दुबारा बत्तीस ईस्वी में,
वहिनें शिविरों केरों भार।
ग्राम धरहरा पर ही रहलै,
मिली करै सब्भैं स्वीकार।। (३३)

साधक छेलै वहाँ पचासी,
कार्यक्रम भी बड़ा विशाल।
'राधा–स्वामी' मत के वै में,
सामिल छेलै शिवव्रत लाल।। (३४)

रहै आगरा में भंडारा,
आमंत्रण के बात बताय।
थोडें दिन ही ध्यान शिविर में,
हुनियों अपनों समय बिताय।। (३५)

मेँहीँ बाबा वयोवृद्ध कें,
राखें चाहै पूरा माह।
पर उनकों समझी लाचारी,
छोड़ी दै छै आगू राह।। (३६)

अहिनों शिविरों के आयोजन,
पड़लों छेलै कहाँ दिखाय।
करै धरहरा के शिविरों के,
महर्षि शिवव्रत बड़ी बड़ाय।। (३७)

मेँहीँ बाबा करै विदाई,
उनका समुचित दै उपहार।
मेँहीँ बाबा केरों महिमा,
अद्‌भुत–अनुपम परम अपार।। (३८)

सन्तमत केरों इक्कीसवाँ,
अधिवेशन लें जगह तलाश।
भागलपुर के कुसापुरों में,
करलक बाबा करी प्रयास।। (३९)

बिहार प्रान्तीय सत्संग के,
पूर्ण सफलता पर उत्साह।
उत्तरी–पश्चिमी भारत के,
भ्रमण करै के पूरा चाह।। (४०)

हरिद्वार–जम्मूकश्मीर तक,
सिंघ, कराँची सें मुल्तान।
लाहौरों के मोंन बनाबै,
जे अखनी छै पाकिस्तान।। (४१)

साथें लै छै जे सत्संगी,
सब्भे छेलै बेपरवाह।
कालिचरण जी (काढ़ा गोला),
पिपरा के ढोढ़ाई साह।। (४२)

एगो रहै मोरषण्डा के,
गुसांई श्री हरंगी दास।
भंगहा के कालाचन्द जी,
चारो ऐलै बाबा पास।। (४३)

चारो सत्संगी के साथें,
करै धरहरा सें प्रस्थान।
भागलपुर के खूब लाल कन,
प्रथम रात भोजन–जलपान।। (४४)

अगला दिन गुरुदेव चलै छै,
सीधा–सीध मुरादाबाद।
देवी बाबा केरों साथें,
नन्दन बाबा आबै याद।। (४५)

वहाँ ठहरलै छह दिन पूरा,
सप्तम दिन आगू के ध्यान।
अमृतसर के धर्मशाला में,
लै छै ठहरे के स्थान।। (४६)

श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर,
गुरुद्वारा हरिमंदिर जाय।
जलियाँ वाला बाग घुमी कें,
लेलक सब्भें नैन जुड़ाय।। (४७)

ट्रेनों सें लाहौर पधारै,
ठाम्हैं स्यालकोट भी आय।
वहाँ धर्मशाला में ठहरी,
सत्संग करै गुरुगुण, गाय।। (४८)

ब्रह्म समाजों केरों लोगो,
बैठै सत्संगों में आय।
ब्रह्म समाजी भी सब्भै कें,
सत्संगों लें घोंर बुलाय।। (४९)

स्यालकोट सें आगू बढ़लै,
पहुँची गेलै जब कश्मीर।
कश्मीरों के शोभा देखी,
मोंन धरै तनियों नैं धीर।। (५०)

आठ दिनाँ तक कश्मीरों में,
करतें रहलै जब सत्संग।
सहयोगी सत्संगी सबकें,
मन में भरलों रहै उमंग।। (५१)

मरी गिरी पर्वत पर होलों,
रावल पिण्डी में ठहराव।
देखें गेलै लक्षशिला जे,
दर्शन केरों छेलै चाव।। (५२)

गंगा कुण्ड नरसिंह मंदिर,
आरू देखै गढ़ प्रल्हाद।
साथीगण के मन मंदिर में,
देखी लें पूरा आल्हाद।। (५३)

सिंध प्रान्त रावल पिंडी सें,
शिकारपुर नैं छोड़ै कोय।
सुवह–शाम के सत्संगों में,
भक्तें लै छै मन कें धोय।। (५४)

सत्संगों के बाद वहाँ सें,
चलै कराँची ध्यान लगाय।
मूल निवासी कच्छ वहाँ के,
सत्संगों में मोन रमाय।। (५५)

भ्रमण करै विशाल सागर तट,
वै में डूबें चाहै मोंन।
जे सागर में रहै समाहित,
हीरा–मोती अहिनों धोंन।। (५६)

तट के वासी शाम–सवेरे,
सागर जल में आबी रोज।
बालू में बहुमूल्य रत्न के,
थक्कै नैं छै करतें खोज।। (५७)

सागर के जल खारा अहिनों,
पीला सें तें जी मिचलाय।
खैलों नैं जैथों ऊ चावल,
सागर जल में अगर सिझाय।। (५८)

मेँहीँ बाबा केरों जेरों,
डुबकी मारी लै आनन्द।
सागर तें दै छै, नैं लै छै,
तट के वासी के सुखकंद।। (५९)

चलै मंडली वै ठामों सें,
लाहौरों दें कें हरिद्वार।
धर्मग्रंथ में वर्णन मिलथों,
साधु–संत केरों आधार।। (६०)

ऋषिकेशों के गंगातट पर,
मंडली करै छै सत्संग।
गंगा मैया के महिमा तें,
पर्वत ऊपर चढ़ै अपंग।। (६१)

वात–पित्त–कफ मेटनहारा,
गंगा मैया केरों जोल।
अंधा कें आँखो दें दै छै,
निर्बल कें दें दै छै बोल।। (६२)

लक्ष्मण झूला, स्वर्गाश्रम के,
दर्शन सें होलै संतोष।
जगह–जगह सत्संगो होलै,
मन में नैं रहलै अफसोस।। (६३)

ऋषिकेशों में राती ठहरै,
भोरे चलै पुनः हरिद्वार।
वहाँ करै सत्संग रात में,
जुटै वहाँ पर भीड़ अपार।। (६४)

बड़ी सबेरे हरिद्वारों सें,
आबी चलै मुरादाबाद।
नंदन साहब आबी मिललै,
पावै छै जैसें संवाद।। (६५)

चलै मंडली साथ धरहरा,
गोड़–हाथ–मन छेलै चूर।
बाबा केरों दर्शन लेली,
जनता सब जूटै भरपूर।। (६६)

ईस्वी तीसों में कर बाबा,
सत्संग भवन पुनर्निर्माण।
सत्संगी लोगों के खातिर,
करै बड़ा भारी कल्याण।। (६७)

अस्सी साल पहिलकों खर्चा,
छेलै लगभग तीन हजार।
सब खर्चा के मेँहीँ बाबा,
लेनें छेलै सिर पर भार।। (६८)

भवन चार सौ लोगों लेली,
बैठै में सबकें आराम।
सत्संगी भवनों में बैठी,
भूलै दुख–तकलीफ तमाम।। (६९)

○○○

सर्ग–14

देवी बाबा जब तक रहलै, मेँहीँ बाबा घूमी–घूमी।
सत्संगों में रमलों रहलै, ई धरती कें चूमी–चूमी।। १।।

परिनिर्वाण हुवै बाबा के, इनकों बदलै जरा इरादा।
शब्द साधना लेली रहलै, कुछ एकान्त खोज में ज्यादा।। २।।

साहवगंजों के पर्वत पर, पहुँची गेलै मोंन बनैनें।
कुछ्छू दिन तक रहलै वैठाँ, जैसें–तैसें ध्यान रमैनें।। ३।।

जगह–जगह में रहै जानवर, जंगल बड़ी भयावह छेलै।
पर बाबा कें ई बातों के, तनियों टा नैं चिन्ता भेलै।। ४।।

अस्सी बरस पहिलकों जंगल, हुमड़ै बाघो, सिंह दहाड़ै।
एकान्त साधना के लेली, बीहड़ वन में अड्डी गाड़ै।। ५।।

छेलै निर्जन वातावरणों, लेकिन बाबा नैं घबड़ैलै।
पता मगर नैं की कारण सें, लौटी बाबा वापस ऐलै।। ६।।

पुनः खोज में गढ़ मुक्तेश्वर, आगू बढ़लै गेलै सारण।
घुमतें–घुमतें आबी गेलै, नजदीके छेलै चम्पारण।। ७।।

कोनों भी जग्घों नैं जँचलै, घुरी–फिरी भागलपुर आबै।
मायागंज मुहल्ला केरों, 'गुफा' बड़ इनका मन भावै।। ८।।

गंगा मैया केरों तट पर, कुप्पाघाट कहाबै वाला।
गुफा भयावह साधु–संत के, लेकिन मोंन रमाबै वाला।। ९।।

कुप्पाघाट बसै जे सन्तो, सब्भे स्वरगों के अधिकारी।
गंगा मैया अपना शरणें, राखी–राखी दै छै तारी।। १०।।

पतित पावनी गंगा केरों, दर्शन जकरा रोजे होतै।
ऊ सबके पापों कें मैया, अपना गरजों सें ही धोतै।। ११।।

ऊ पावन जग्घों कें बाबा, पहुँची पहिनें साफ कराबै।
छतरू सेवक साफ करै में, बड़ी पुरानों हड्डी पाबै।। १२।।

वही गुफा में सुरंग ढेरी, ऊ सुरंग सें आगू जैथें।
मेँहीँ बाबा हरखित होलै, एगो सुन्दर कमरा पैथें।। १३।।

वै कमरा में मेँहीँ बाबा, पहुँची नित ध्यान लगाबै छै।
कुछ्छू दिन के बाद वहाँ पर, संन्यासी एगो आबै छै।। १४।।

ऊ संन्यासी कुछ दिन पहिनें, वै सुरंग में रहलों छेलै।
गंगातट कुप्पाघाटों के, सुख–दुख सब्भे सहलों छेलै।। १५।।

ऊ सुरंग में स्वाद रहै जे, ध्यानों के सब्भे ठो चाखी।
इक दीवारों में गाड़ी कें, गेलों छेलै रुपया राखी।। १६।।

बाबा सें तब आज्ञा माँगी, संन्यासी जी भीतर गेलै।
रखलों छेलै जे रुपया ऊ, तुरत निकाली बाहर गेलै।। १७।।

एक महात्मा फेनूँ आबै, रहै गुफा के वोहो वासी।
तकदीरों के मगर मारलों, मुख मंडल पर रहै उदासी।। १८।।

महान आत्मा छेलै उनकों, हनुमान नाम सें जानी लें।
महावीर बजरंगवली के, सेवक छेलै ऊ मानी लें।। १९।।

भागलपुर के दारोगा जी, बात कहीं से जानी लै छै।
हड्डी निकलै जे सुरंग सें, खतरा ठाम्हैं मानी लैछै।। २०।।

धावा बोलै तब बाबा पर, हड्डी लें कें जाँच करावै।
छेलै हड्डी बहुत दिनाँ के, जानी शंका दूर भगावै।। २१।।

अंग्रेजी सरकार वहाँ पर, आबी कहियो धोंस जमावै।
कभी क्रांतिकारी जानी कें, कुछ सें कुछ आरोप लगावै।। २२।।

भागलपुर के कभी कमिश्नर, ऐलै घूमी–फीरी गेलै।
मुस्लिम सम्प्रदाय वाला भी, आबी कुछ्छू खेला–खेलै।। २३।।

'यह तो कब्रिस्तान हमारा, यहाँ जमे हो कैसे आकर।
यह तो अत्याचार तुम्हारा, दम लेगें हम तुम्हें भगाकर।।' २४।।

भागलपुर के जिलाधिकारी, के पेशकार वौझैं छेलै।
डाँट लगावै जब जोरों सें, तब सब मुँह लटकैनें गेलै।। २५।।

वाधा ढेरी ऐलै गेलै, पर कुछ नैं बाबा घबड़ैलै।
इनकों भक्ति–भाव देखी कें, उत्पाती भी खुद शरमैलै।। २६।।

सूरत–शब्द योग साधन तें, डेढ़ बरस तक करतें रहलै।
माथा ऊपर सब वाधा कें, बाबा हरदम सहतें रहलै।। २७।।

आत्म ज्ञान कें प्राप्त करी कें, परमात्मा सें बाबा मिललै।
ब्रह्मतेज सें चमकें लगलै, मुख–मंडल फूलों रङ् खिललै।। २८।।

○○○

सर्ग–15

'सत्संग तो मेरी स्वाँस है,' बाबा केरों उक्ति।
लागै जेना धर्म–ग्रंथ के, उपदेशात्मक सूक्ति।। १।।

आत्म–ज्ञान पाबी कें बाबा, करै सदा सत्संग।
मानव के कल्याण करै के, मन में बड़ा उमंग।। २।।

अमर ज्ञान बाँटै के लेली, सत्संगों में लीन।
हमरों भारत छेलै तखनी, यवनों के आधीन।। ३।।

बाइसवाँ अधिवेशन होलै, ग्राम धरहरा आय।
ढोढ़ाई जी भार समूच्चा, लेनें रहै उठाय।। ४।।

तेइसवाँ अधिवेशन जानों, गुरुमेला कहलाय।
गुरुमेला में ध्यान–साधना, आयोजन करवाय।। ५।।

ध्यान योग के करी परायण, भ्रमण मंडली साथ।
घूमै सगरे वैमें लोगें, खूब बँटाबै हाथ।। ६।।

कोरका निवासी संतोषी, दै छै एक सलाह।
राम कृष्ण भी रमला केरों, भरै जरा उत्साह।। ७।।

पैदल घूमै सोलह गामें, करै वहाँ सत्संग।
सब्भै के उत्साह देखी कें, बाबा रहलै दंग।। ८।।

रहै छब्बीसवाँ अधिवेशन, बाबा कुप्पा घाट।
अधिवेशन में सत्संगी सब, जोहै छेलै वाट।। ९।।

भक्तों के पूरा आग्रह पर, लैछै फेनूँ भाग।
मगर गुफा केरों एक्कोपल, नैं चाहै परित्याग।।१०।।

अंतिम दिन दू सौ नर–नारी, भजन–भेद कर प्राप्त।
बाबा के आस्था सागर में, सब्भे होलै आप्त।।११।।

वही समय चौंतीसों वाला, जानी लें भूकम्प।
सुनी–सुनी आवाज भयंकर, सब छेलै हड़कम्प।।१२।।

रहै महाप्रलयंकारी ऊ, लोगो छेलै त्रस्त।
बड़का–बड़का महल–अटारी, सब्भे होलै ध्वस्त।।१३।।

लेकिन जानी अचरज करभें, सत्संगों के लोग।
ध्यान–साधना करथैं रहलै, करथैं रहलै योग।।१४।।

क्षति नैं ककरो तिलभर होलै, अचरज केरों बात।
सही सलामत सब्भे रहलै, यहें कहों दैवात।।१५।।

अधिवेशन सें लौटी बाबा, भागलपुर जब आय।
भेंट करै लें सन्यालों सें, लेलक मोंन बनाय।।१६।।

भूपेन्द्रनाथ सन्याल रहै, साधक परम उदार।
श्यामा चरण लाहिड़ि केरों, शिष्य गला के हार।। १७।।

परिवारों में जीवन जीतें, योगी आरू भक्त।
ध्यान–साधना योग करै में, रहै सदा अनुरक्त।। १८।।

प्रश्नोत्तर भी ढेरी होलै, बातचीत के संग।
दोन्हूँ के मन रहै रंगलों, लागै एक्के रंग।। १९।।

एक रहै संन्यासी आरू, दूजा रहै गृहस्थ।
अन्तर ऐसें ज्यादा कुछ नैं, दोनों बिल्कुल स्वस्थ।। २०।।

मंद्राचल पर्वत बौंसी के, जे बिल्कुल नजदीक।
आश्रम वहीं सान्यालजी के, रहै परम रमनीक।। २१।।

प्रसिद्ध सान्यालों के आश्रम, कहलाबै गुरुधाम।
मन्द्राचल पर्वत के आबै, धर्म–ग्रंथ में नाम।। २२।।

मथी समुन्दर रतन निकालै वाला जे मंदार।
गौरव गाथा मंदारों के, जानै छै संसार।। २३।।

सत्संगों सें लौटी बाबा, आबै छै गुरुधाम।
सान्यालों के पैर छुवी कें, करलक तुरत प्रणाम।। २४।।

वहीं धर्म पत्नी जब आबै, जोड़ै उनका हाथ।
अभिवादन के बाद बैठली, पतिदेवों के साथ।। २५।।

बाबा बोलै शंभु–भवानी, केरों दर्शन आज।
दोन्हूँ केरों आशीर्वादों सें होतै सब काज।। २६।।

आबै घरी सान्याल जी नें, दै छै एक अनार।
मिललै जब प्रसाद बाबा के, मन में हर्ष अपार।। २७।।

एक व्यक्ति कें एगो दाना, बाँटै के लै ठान।
धन्य–धन्य छै मेँहीं बाबा, धन्य–धन्य अरमान।। २८।।
बत्तीसवाँ सें सैंतीसवाँ, अधिवेशन करवाय।
जगह–जगह सत्संगों केरों, महिमा दै बतलाय।। २९।।

कुरमीचक मलहरा गाँव अब, झारखण्ड कहलाय।
आड़तीसवाँ अधिवेशन के, वैझें मोन बनाय।। ३०।।

अधिवेशन में हाथ बँटाबै, बाबू राम प्रसाद।
डॉक्टर रहै खगड़िया केरों, करलों गेलै याद।। ३१।।

करै हुनी प्रस्ताव उपस्थित, मानों एक विचार।
मनें जयन्ती बाबा केरों, हमरों छै उद्‌गार।। ३२।।

सब लोगों कें बढ़िया लागै, उनकों उचित विचार।
वही साल आजादी मिललै, भारत कें उपहार।। ३३।।

सैंतालीसों सें अभियो तक, निश्चय साले साल।
मनै जयन्ती बाबा केरों, बजै झाल–करताल।। ३४।।

प्रथम जयन्ती उत्सव घरियाँ, झलकै सबमें हर्ष।
आयु रहै बाबा के वै दिन, पूरा बासठ वर्ष।। ३५।।

चालिसवाँ अधिवेशन होलै, अड़तालिस में भाय।
वही साल निर्वाण बापू के, सब्भैं शोक मनाय।। ३६।।

अड़तालिस सें अधिवेशन के, नामों भी बदलाय।
अखिल भारतीय संतमत के, अधिवेशन कहलाय।। ३७।।

उनचासों में इकतालिसवाँ, अधिवेशन अभियान।
भागलपुर के परबत्ती में, चुनलक भव्य स्थान।। ३८।।

जगदीश काश्यप जी पधारै, अधिवेशन में भाय।
अधिवेशन के गौरव गरिमा, देखी हर्ष मनाय।। ३९।।

लघुशंका के खातिर जगलै, तीन बजे जब रात।
पण्डालों में घूमी देखै, सगरे अद्‌भुत बात।। ४०।।

सत्संगीगण बैठी–बैठी, रहै लगैनें ध्यान।
मेँहीँ बाबा के निवास पर, करै तुरत प्रस्थान।। ४१।।

बाबा कें ध्यानों में पाबी, चकित रहै तत्काल।
ज्योति–पुंज सें चमकै छेलै, बाबा केरों भाल।। ४२।।

सुबह–सुबह भाषण में बोलै, 'हुआ पूर्ण अरमान।
बाबा में मैं देख रहा हूँ, सही बुद्ध भगवान।। ४३।।

इतने सारे लोगों का जब, एक साथ हो ध्यान।
निश्चय ही तब संभव है, इस जग का कल्याण।।' ४४।।

बयालिसवाँ अधिवेशन छेलै, ईस्वी रहै पचास।
पारित होलै अधिवेशन में, प्रस्ताव एक खास।। ४५।।

एक पत्रिका मासिक निकलें, सबकें यहें विचार।
वै माध्यम सें सत्संगों के होतै सदा प्रचार।। ४६।।

श्री हरि कृष्ण दास जी 'टण्डन', रहै वहाँ फिलहाल।
लोग पुकारै उपनामों सें, उनका चुन्ना लाल।। ४७।।

देवी बाबा केरों चेला, छेलै उनकों बाप।
ध्यान–साधना करै हमेशा, बैठी कें चुपचाप।। ४८।।

रहै पत्रिका जे प्रस्तावित, 'टण्डन' सोच–विचार।
रखै 'शांति–संदेश' नाम तब, करै लोग स्वीकार।। ४९।।

आज तलक भी छपी रहल छै, आध्यात्मिक ऊ पत्र।
सन्त–मतों कें छिरियाबै छै, यत्र–तत्र–सर्वत्र।। ५०।।

पत्रिका के प्रथम संपादक, रहलै विश्वानंद।
बाबा केरों कृपा दृष्टि सें, नैं छै अभियो बन्द।। ५१।।

संपादकीय, सत्संग सुधा, मुख्य विषय अनमोल।
सदा संतवाणी छापै छै, जे मिश्री के घोल।। ५२।।

○○○

सर्ग–16

जून महीना मुश्किल जीना,
धूपें ढेर जलाबै छै।
कोण्टा–ओहारी बैठी कें,
लोगें समय बिताबै छै।। (१)

उमस रात में पंखा झेली,
रात बिताबै जागी कें।
लेकिन ई सब धूपें, गर्मी,
की करते बैरागी कें।। (२)

जाड़ा, गर्मी, बरसातों के
असर पड़ै देहातों में।
जहाँ भूमि पर लेटी लोगें,
समय बिताबै रातों में।। (३)

एक जून बावन में छेलै,
उद्घाटन सत्संगों के।
शिव पूजन सहाय जी आबै,
वर्षा रहै उमंगों के।। (४)

श्री सुधांशु जी 'द्विज' जी साथें,
उद्घाटन में आबै छै।
अध्यक्षों केरों आसन पर,
बाबा कें बैठाबै छै।। (५)

उद्घाटनकर्ता सहाय जी,
आबी दीप जलाबै छै।
साहित्य मनीषी ढेरी छेलै,
सब्भैं हर्ष मनाबै छै।। (६)

अध्यक्षों के पद सें बाबा,
साहित्यों के परिभाषा।
बतलाबै छै जहिनों छेलै,
उनका सें सबकें आशा।। (७)

'हिन्दुस्तान' 'हिन्द' 'हिन्दी' के,
अर्थ बताबै खोली कें।
कर्मकाण्ड के उदाहरण भी,
दै छै साथें घोली कें।। (८)

आर्यावर्त्ते, भारत खण्डे,
कर्मकाण्ड में ऐलों छै।
हिन्द, हिन्दवी, हिन्दी, हिन्दू,
वै में कहाँ समैलों छै।। (९)

सबक नाम बदलै के बाबा,
दै छै सब विद्वानों कें।
लाचारी में व्यक्त करै छै,
आगू अपना आनों कें।। (१०)

'भारतीय अपने को जानूँ,
भारत देश हमारा है।
और भारती भाषा सबकी,
तन–मन जिस पर वारा है।। (११)

बाबा के ओजस्वी वाणी,
मुग्ध करै विद्वानों कें।
बाबा तें बाँटै में छेलै,
सगरे अपना ज्ञानों कें।। (१२)

बातचीत के रात सिलसिला,
जखनी होलों छै जारी।
मेँहीँ बाबा बैठी गेलै,
बीचों में पलथी मारी।। (१३)

श्री सहाय जी प्रसन्नता कें,
व्यक्त करै छै बोली कें।
फेनूँ कुछ उद्गार रखै छै,
लें साथें हमजोली कें।। (१४)

'स्वामी जी! मैं सही व्यक्तिगत,
सहमत सभी विचारों से।
पर मैं हूँ लाचार जरा सा,
आन्दोलन के मारों से।। (१५)

'हिन्दी राष्ट्र भाषा आन्दोलन',
पूर्ण सफलता के पथ पर।
मैनें आसन धार लिया है,
सबसे आगे के रथ पर।। (१६)

एक नया आन्दोलन उसमें,
अगर जोड़ना चाहूँगा।
नहीं सफलता हाथ लगेगी,
तो पीछे पछताऊँगा।। (१७)

मैं अस्वस्थ रहा करता हूँ,
मुझमें अब सामर्थ्य नहीं।
आगे जो मैं कदम उठाऊँ,
हो ना जाये व्यर्थ कहीं।। (१८)

अमर नाथ झा, द्विज, सुधांशु जी,
स्वस्थ साहित्यकारों के।
मोंन हमेशा रहै पक्ष में,
सदा 'सहाय' विचारों के।। (१९)

लक्ष्मी नारायण सुधांशु जी,
अवंतिका के संपादक।
बाबा के बढ़िया विचार के,
बनलै समुचित संवाहक।। (२०)

भारत भर केरों साहित्यिक,
बाबा के मनसा जानै।
शब्दों के जे व्याख्या होलै,
शब्दकोष सम्मत मानै।। (२१)

तिरपन में आचार्य विनोबा,
पद यात्रा केरों आदी।
भाषण दै डाली पड़ाव जब,
देखै भारी आबादी।। (२२)

भूदान यज्ञ केरों मतलब,
जमींदार कें समझाबै।
निज जमीन के छट्ठा हिस्सा,
दान करै लें बतलाबै।। (२३)

भाषण के उपरान्त एक ठो,
पुस्तक लिखलों गीता पर।
'गीता प्रवचन' बेचै छेलै,
सबके हेतु सुभीता पर।। (२४)

एगो प्रति बाबा कें मिललै,
देखै लेली हाथों में।
मनोयोग सें खूब पढ़लकै,
धीरज राखी साथों में।। (२५)

बात जँचै नैं जे बाबा कें,
राखै छै चिह्नों पारी।
संत विनोबा जी सें मिललै,
जखनी ऐलै मनिहारी।। (२६)

अपनों–अपनों बात रखलकै,
दोन्हूँ जब पारा–पारी।
किंतु विनोबा बतलाबै छै,
अपनों कुछ्छू लाचारी।। (२७)

'कर्मयोग' पर जोर विनोबा,
जी जब मारै कस्सी कें।
'ध्यान–योग' पर मैंहीं बाबा,
बोलै बड्डी हँस्सी कें।। (२८)

'समाधि' ऊपर बात निकललै,
दोनों छै अच्छा ज्ञाता।
एगो छै भूदान करै में,
एगो ज्ञानों के दाता।। (२९)

एक दोसरा के कामों के,
जब करलक खूब समीक्षा।
दोनों तें यज्ञों में छेलै,
दोन्हूँ के पावन इच्छा।। (३०)

मन भरला पर बाबा बोलै,
'भूदान यज्ञ का भागी।
मैं भी बनना चाह रहा हूँ,
मैं भी तो बिल्कुल त्यागी।।' (३१)

बारह एकड़ भूमि यहीं है,
लें पहले छट्ठा हिस्सा।
आगे फिर प्रारंभ करैंगे,
कोई भी बढ़िया किस्सा।। (३२)

दू एकड़ धरती दानों के,
बाँटै तुरत गरीबों में।
के देखै छै की छै लिखलों,
ककरा कहाँ नसीबों में।। (३३)

संध्या वेला उपासना लें,
बाबा लौटी आबै छै।
उधर विनोबा जी भी अपनों,
आगू काम बढ़ाबै छै।। (३४)

बाबा एक दार्शनिक छेलै,
रहै अध्ययन शास्त्रों के।
धर्म ग्रंथ के पन्ना उलटी,
चरित्र देखै पात्रों के।। (३५)

जानै केरों सदा लालसा,
लगलों जकरा अंदर में।
संतुष्टि के बात नैं कहियो,
डूबै ज्ञान समुन्दर में।। (३६)

सुकरातों केरों शब्दों में,
वहें दार्शनिक कहलाबै।
सब प्रकार के ज्ञानों सें जे,
अपना मन कें बहलाबै।। (३७)

ई सब्भै गुण रहै समैलों,
महर्षि मेँहीँ बाबा में।
उनका खातिर फर्क जरा नैं,
काशी आरू काबा में।। (३८)

❍❍❍

सर्ग–17

उन्नीस सौ चौंतीस ईस्वी, आत्म–ज्ञान कर प्राप्त।
ध्यान–साधना–योग गुफा के, बाबा करै समाप्त।। १।।

पावन गंगा तट पर छोटों, कुटिया के निर्माण।
करना चाहै मेँहीँ बाबा, जे जग्घों सुनसान।। २।।

बालू पर खुट्टा गाड़ी कें, छौनी में दै कास।
कुश–डभार के टटिया–फरकी, वै में संत निवास।। ३।।

साधु–संत–संन्यासी सबके, जोहें लगलै बाट।
सुन्दर कुटिया बगल गुफा के, गंगा केरों घाट।। ४।।

दर्शन लेली कुछ नैं बूझै, दिन–दुपहरिया–भोर।
जखनी देखै लोग चलै छै, कुप्पाघाटें ओर।। ५।।

बड़का एगो हॉल बनाबै, कमरा भी कुछ खास।
दूर–दराजों के सत्संगी, वै में करै निवास।। ६।।

छोटों कुटिया के जग्घों पर, बनलै भवन विशाल।
सत्संगों में बार्जे लगलै, ढोल, झाल, करताल।। ७।।

नाम रखाबै 'महर्षि मेँहीँ आश्रम' कुप्पा घाट।
तप में तपलों बाबा केरों, लागै रूप विराट।। ८।।

बाबा के उपदेश छपी कें, पावै पुस्तक रूप।
उपदेश ग्रंथ कें सत्संगी, सदा दिखावै धूप।। ९।।

वहीं पुस्तकालय बनवाबै, जे कि ज्ञान भंडार।
'सद्गुरु देवी बाबा साहब' रखलक नाम विचार।। १०।।

छियासठों में वै ठाँ खुललै, एगो प्रिंटिंग प्रेस।
छपलों गेलै वै प्रेसों में, बाबा के उपदेश।। ११।।

रंग–विरंगा फूल लगावै, आश्रम के नजदीक।
जड़ी–बुटी के पौधा सें भी, जगह लगै रमनीक।। १२।।

मौलसिरी, तुलसी, शिवलिंगी, लगलों छेलै ढेर।
आश्रम में गोशाला बनलै, नैं लगलै कुछ देर।। १३।।

एक औषधालय के होलै, जब वै जाँ निर्माण।
दीन–दुखी, निस्सहाय केरों, होलै तब कल्याण।। १४।।

प्रेमी भक्तों के आग्रह पर, गाँव–शहर में जाय।
अनमोल ज्ञान कें बाँटै जे, आत्म–ज्ञान लै पाय।। १५।।

जखनी श्री 'रुँगटा' जी बनलै, महासभा अध्यक्ष।
सत्संगों में झलकें लगलै, पूरा उज्ज्वल पक्ष।। १६।।

केन्द्र हमेशा कुप्पाघाटे, बाँटै सगरे ज्ञान।
योग–साधना लेली एगो, पुनः हॉल निर्माण।।१७।।

पाँच–पाँच सौ साधक बैठी, करै हौल में ध्यान।
ठाम्हैं वहाँ भोजनालय के, भी होलै निर्माण।।१८।।

जोंन गुफा में मास अठारह, बाबा करलक ध्यान।
आगू में सुन्दर दरवाजा, के होलै निर्माण।।१९।।

गुफा लगै छै बहुत पुरानों, ऐतिहासिक प्रमाण।
मय दानव के द्वारा होलों, छेलै ई निर्माण।।२०।।

दानव जखनी हारी गेलै, देवासुर संग्राम।
यही गुफा में बैठी–बैठी, करै रहै विश्राम।।२१।।

कोय कहै छै लाक्षागृह के, छेलै यैठें स्थान।
पाण्डव के जान बचावै लें, होलों छै निर्माण।।२२।।

ह्वेन सांग के दिनचर्या में, गौतम बुद्ध बखान।
'एक जन्म मैं बैल बना था, यह गुफावास स्थान।।' २३।।

भागलपुर के गजेटियर में, अंकित छै ई बात।
की सच्चा, की झूठ बताबौं, हमरों नैं औकात।। २४।।

इकहत्तर में शाहीबाबा, सेवा कर स्वीकार।
गंगा तट पर घाट बनाबै, सुन्दर सीढ़ीदार।। २५।।

'महर्षि मेँहीँ स्नान घाट' सें, जानै छै सबलोग।
पचीस बीघा जमीन सुन्दर, जे खेती के योग।। २६।।

कृपा सदा गंगा मैया के, बाबा के अकबाल।
कुप्पाघाट मनोरम लागै, तट पर भवन विशाल।। २७॥

पूर्व मंत्री गिरीश तिवारी, कुप्पाघाटें आय।
कुप्पाघाटों केरों महिमा, सबकें कहै सुनाय।। २८॥

'जिनका ऊपर परम पिता के, दया–दृष्टि हो जाय।
अहिनों जग्घों पर आबै के, अवसर वोहीं पाय।।' २९॥

जापानी सत्संगी महिला, ऐलै हिन्दुस्तान।
आध्यात्मिक गंभीर जगह पर, छेलै उनकों ध्यान।। ३०॥

'यूकिको फ्यूजिता' नाम रहै, वाणी में भी ओज।
कुप्पाघाटें पहुँची गेलै, करनें–करनें खोज।। ३१॥

बाबा पर जब नजर पड़ै छै, आबें लगलै ख्याल।
बाबा के दर्शन सपना में, पहिनें कुछ्छू साल।। ३२॥

भारत पहुँची ऊ महिला के, मिटलै मन के मैल।
ई घटना के समय सुहावन, अड़सठ के अप्रैल।। ३३॥

इंग्लैण्डों के एगो सज्जन, रहै विदेशी भक्त।
'आज हवा ही मेरा घर है,' कहै यहें हर वक्त।। ३४॥

जब आश्रम आबी कें देखै, धरती पर के स्वर्ग।
यहाँ पड़ै छै गंगाजल के, सूरज कें नित अर्घ।। ३५॥

आश्रम केरों संबंधों में, उनको रहै विचार।
बाबा केरों चरण–कमल में, छै पूरा संसार।। ३६॥

तीन बरस जीवन के अंतिम, बीतें आश्रम बीच।
घोंर हवा जे हमरों छेकै, लानें हमरा खींच।। ३७॥

'माइकेल बीसेण्ट' कहै छै, शायद उनकों नाम।
भक्ति–भाव सें मुक्ति मार्ग कें, खोजै आठो धाम।। ३८॥

धाम अयोध्या जी के वासी, लाल सखे शुभ नाम।
भजन–भाव के बाद करै नित, अपनों कोनों काम।। ३९॥

सद्गुरु दर्शन के अभिलाषा, मन में भी उत्साह।
गाड़ी पकड़ी आगू बढ़लै, भागलपुर के राह।। ४०॥

वार्टों में डब्बा में घुसलै, गुण्डा के जामात।
सब यात्री के साथें करलक, मनमाना उत्पात।। ४१॥

लालसखे जी कें छोड़ै छै, देखी चन्दन भाल।
बाँकी सबके छीनें लगलै, रुपया–पैसा–माल।। ४२॥

नवविवाहिता कें छेड़ै में, बोलें लगलै सन्त।
दू ठो गुण्डा आबी गेलै, संतों पास तुरन्त।। ४३॥

गुण्डा बोलै 'हम समझे थे, तुमको पूरा संत।
सबसे पहले करना होगा, तेरा ही अब अंत।।' ४४॥

इतना बोली पकड़ी लै छै, दू ठो दोनों हाथ।
बाहर फेकै ऊ संतों कें, गोस्सा केरों साथ।। ४५॥

संयोगों सें बाबा गिरलै, जै जाँ रहै पुआल।
कहिया बिगड़ी गेलै ककरों, ईश्वर जकरों ढाल।। ४६॥

जब गार्डो के नजर पड़ै छै, मारी दै छै ब्रेक।
घटना सच्चा जानै लेली, शुरू करलकै चेक।। ४७॥

गाड़ी रोकी गार्डें चाहै, पूछें जखनी हाल।
कहै सन्त डब्बा में देखों, अवला जे बेहाल।। ४८॥

गार्ड पुलिस के साथें होलै, जाही लें तैयार।
गुण्डा सब्भे उतरी–उतरी, होलै तुरत फरार।। ४९॥

पुलिस पकड़लक दौड़ी दू ठो, मारै भारी मार।
सन्त ट्रेन में आबी होलै, गार्डो साथ सवार।। ५०॥

भागलपुर उतरी कें गेलै, मेँहीँ बाबा पास।
बाबा छेलै ध्यान लगैनें, बन्द करी कें स्वाँस।। ५१॥

बाबा खोली आँख कहै छै, जे ऐतै दरवार।
ईश्वर दरिया के बीचों सें, नाव लगैतै पार।। ५२॥

लालसखे जी पैर छुवी कें, बोलै अपनों बात।
गाड़ी में जे होलों छेलै, सही–सही उत्पात।। ५३॥

घटना क्रम के बात सुनी कें, बाबा दै मुस्काय।
लालसखे जी बाबा चरणों में गेलै लपटाय।। ५४॥

राष्ट्र–प्रेम मेँहीँ बाबा में, बड्डी पकड़ै जोर।
बहै सभ्यता–संस्कृति लेली, आँखी सें भी लोर।। ५५॥

युद्ध भूमि के हिंसा जानों, नैं हिंसा कहलाय।
देशों लेली प्राण गँवाना, धर्म कहै समझाय।। ५६॥

चीन युद्ध में बाबा बोलै, 'अगर कहे सरकार।
बूढ़ा होकर जान गमाने, खातिर मैं तैयार।।५७॥

जीवन का तो अन्त सुनिश्चित, जान रहे हो भाय।
भारत की रक्षा में रहना, पूरा जन समुदाय।।'५८॥

बाबा के वाणी सें समझों, बन्द रहै छै युद्ध।
हम्में सब तें समझै छीयै, बाब गौतम बुद्ध।।५९॥

तेजपुरों में नाश्ता–पानी, भोजन दिल्ली जाय।
चीनी केरों यहें घोषणा, जानी लें सब भाय।।६०॥

पर नैं कोनों दवाब ऐलै, युद्ध अचानक बन्द।
सेना केरों रहै हौसला तहिया पूर्ण बुलन्द।।६१॥

करै सुरक्षा कोषों खातिर, बाबा हरदम दान।
करतें रहलै जब तक जीलै, सामाजिक कल्याण।।६२॥

○○○

सर्ग–18

बासठ में लखनऊ आगरा,
नैमिसारण्य, सोरो जाय।
अलीगढ़, मथुरा, हाथरस भी,
पहुँची बाबा धूम मचाय।। (१)

अंठावनमाँ अधिवेशन भी,
राजगीर में जब करवाय।
ऊ अधिवेशन ही जानी लें,
विशेष अधिवेशन कहलाय।। (२)

तपस्या भूमि महावीर के,
गौतम वहीं लगाबै ध्यान।
बाबा केरों वचन सुनैलें,
दौड़ी पड़लै सब इन्सान।। (३)

प्रियबुद्धु जी थाइलैण्ड के,
लाओस के भिक्षु भी आय।
घोषानंद कम्बोडिया के,
बाबा सें जे लाभ उठाय।। (४)

नवांग छोड़न तिब्बत वासी,
दिल्ली, कलकत्ता के लोग।
देशों के कोना–कोना सें,
आबै पाबी कें संयोग।। (५)

साठवाँ सलाना अधिवेशन,
अड़सठ में होलै हरिद्वार।
भागलपुर सें ट्रेन सुरक्षित,
भक्त पहुँचलै एक हजार।। (६)

कानपुर, बदायूँ, दिल्ली सें,
लखनऊ, आगरा, गुजरात।
पंजाबों सें आबी गेलै,
श्रोता सब्भे रातोरात।। (७)

बाबा के बड्डी छै प्यारों,
चुनलों जगह मुरादाबाद।
सत्संगी सब पहुँची गेलै,
बाबा कें बस करनें याद।। (८)

यूकिको फ्यूजिता जापानी,
शामिल होलै वै में जाय।
बाबा के उपदेश सुनी कें,
शिष्या बनलै शीश झुकाय।। (९)

भजन–भेद पाबै के लेली,
बाबा आगू बात चलाय।
मैंहीं बाबा बोलै तखनी,
महिला कें पूरा समझाय।। (१०)

'कुप्पाघाट अगर आओ तो,
दूँगा भजन–भेद बतलाय।'
यहाँ अभी माहौल नहीं है,
बता दिया मैं अपनी राय।। (११)

निश्चित करलों समय रहै जे,
वै में आबी बाबा पास।
भजन–भेद कें प्राप्त करलकै,
ढेर दिनाँ सें छेलै आस।। (१२)

जापानी महिला बोलै छै,
बाबा सें कुछ अर्ज सुनाय।
''दूर आप से रह पाऊँगी,
अब तो संभव नहीं लखाय।।'' (१३)

बाबा बोलै 'याद करोगी,
बैठी–बैठी जब जापान।
उसी वक्त मैं मिल जाऊँगा,
करने को तेरा कल्याण।।' (१४)

यूकिको फ्यूजिता बोलै छै,
'पहुँचूंगी जब मैं जापान।
सोच रही हूँ वहाँ पहुँचकर,
करनें आश्रम का निर्माण।।' (१५)

मैंहीं बाबा बोलै तखनी,
'यह तो अद्‌भुत होगा काम।'
मेरा आशीर्वाद रहेगा,
बढ़िया ही होगा परिणाम।। (१६)

हमलोग यहाँ से पहुँचैंगे,
भ्रमण के लिए जब जापान।
आश्रम में सत्संग करैंगे,
और लगायैंगे भी ध्यान।। (१७)

रहै छियासठवाँ अधिवेशन,
मार्च महीना सत्तर साल।
भागलपुर सें फेनूँ खुललै,
गाड़ी बाबा भी खुशहाल।। (१८)

दिल्ली उतरी–उतरी सब्भे,
चलै रामलीला मैदान।
सत्संगी तें करथैं रहलै,
बाबा के हरदम गुणगान।। (१९)

भारत के उपमंत्री डॉक्टर
सरोजनी माला पहनाय।
उपस्थित छेलै विशिष्ट अतिथि,
सम्मानों में हाथ बँटाय।। (२०)

प्रवचन तीनों जग्घों केरों,
पुस्तक रूपें छै तैयार।
सत्संगीगण के घर–घर में,
देखें पारों ई उपहार।। (२१)

सद्गुरु महाराज जी गेलै,
घुरतें–फिरतें जब ऋषिकेश।
वै आश्रम केरों संस्थापक,
छेलै योगी नाम महेश।। (२२)

परिभ्रमण में गेलों छेलै,
आबी कें पूरा पछताय।
परम पूज्य मेँहीँ बाबा सें,
भेंट करै लें झट सिधियाय।। (२३)

महर्षि महेश योगी आबै,
भागलपुर के कुप्पाघाट।
सूरज के किरणों रंङ् चमकै,
योगी जी के दिव्य ललाट।।२४।।

महर्षि महेश योगी माँगै,
छै बाबा सें आशीर्वाद।
बाबा मेटों ई सांसारिक,
जीवन के पूरा अवसाद।। (२५)

मेँहीँ बाबा बोलै तखनी,
'आप से खुद बिखरे प्रकाश।
आश्रम में भी जाकर देखा,
कृतित्व का होता आभास।।' (२६)

सुनथैं महेश योगी बोलै,
नैं बैठै तनियों चुपचाप।
'मुझमें तो प्रकाश है बाबा,
पावर–हाउस खुद हैं आप।।' (२७)

महर्षि मेँहीँ बाबा बोलै,
'भारत के ज्यादातर लोग।
समझ नहीं पाते हैं कुछ भी,
क्या होता है साधन–योग।।' (२८)

प्रचार–प्रसार करना होगा,
मुख्य बात रखनी है याद।'
बिदा करै महेश योगी कें,
अपना हाथें दें प्रसाद।। (२९)

सतहत्तर के अप्रैलों में,
महेश योगी करी उपाय।
वेद–मंदिर के प्रतिष्ठापन,
अपनों निर्णय सगर सुनाय।। (३०)

शंकराचार्य नगर बीच में,
ऋषिकेशों के आसे–पास।
मेँहीं बाबा कर–कमलों सें,
कराबै वैठाँ शिलान्यास।। (३१)

महेश योगी के आग्रह पर,
दू दिन ठहरी कर सत्संग।
करलक बाबा लौटै लेली,
योगी जी कें पूरा तंग।।(३२)

फेनूँ कारों द्वारा दिल्ली,
दिल्ली पकड़लक वायुयान।
पटना आबी कारों सें ही,
पहुँचै जहाँ गन्तव्य स्थान।। (३३)

सत्तरवाँ अधिवेशन होलै,
अठहत्तर में पूरा जोर।
देशों के कोना–कोना में,
मचलों छेलै काफी शोर।। (३४)

भागलपुर में होना छेलै,
बढ़िया रहलै ई संयोग।
टूटी पड़लै भीड़ उमड़लै,
नैं मानै आबै सें लोग।। (३५)

महेश योगी सें उद्घाटन,
अधिवेशन के होना जान।
उतना ऐलै लोग वहाँ पर,
नैं छेलै जकरों अनुमान।। (३६)

स्विटजरलैण्डों सें योगी जी,
वायुयान के द्वारा आय।
मेँहीँ बाबा उनका हाथों
सें ही उद्घाटन करवाय।। (३७)

मेँहीँ बाबा के निवास पर,
महेश योगी जखनी आय।
साथें नैं बैठै आसन पर,
चरणों में बैठै सिरनाय।। (३८)

विदेश यात्रा भ्रमण करै के,
महेश योगी मारै जोर।
वायुयान द्वारा अमेरिका,
यूरोपों के छोरे–छोर।। (३९)

सब्भे खर्चा महेश योगी,
करतै जानी लें तों भाय।
प्रस्ताव मगर मेंहीं बाबा,
दै छै बोली कें ठुकराय।। (४०)

राखै याद सभ्यता–संस्कृति,
की लोगों पर शान–गुमान।
दशा देश के झलकै छेलै,
जकरा ऊपर पूरा ध्यान।। (४१)

उच्च शिखर के साधक छेलै,
करै योग तप आरू यज्ञ।
खूबी एगो आरू छेलै,
साहित्य कला के मर्मज्ञ।। (४२)

महर्षि मेंहीं पदावली के,
सब पद में छै भरलों राग।
सत्संग योग भी अनुपम कृति,
देखें पारों चारो भाग।। (४३)

रहै प्रकाशित पहिनें भी तें,
रामचरित मानस के सार।
प्रथम भाग सत्संग सुधा के,
होलै चौवन में तैयार।। (४४)

ढेरी पुस्तक छपलै आरू,
दै बाबा कें जब सम्मान।
नैं स्वीकारै सम्मानों कें,
पुरस्कार पर भी नैं ध्यान।। (४५)

कर पी.एच.डी. शोधकारी,
विद्वानें इनको साहित्य।
शोध परक छै जीवन–दर्शन,
आभासित जेना आदित्य।। (४६)

आत्म ज्ञान पाबी कें बाबा,
बनबै एगो अहिनों चित्र।
महाशून्य में भँवर गुफा कें,
देखी सबकें लगै विचित्र।। (४७)

हिरण्य गर्भ, शब्दातीत पद,
त्रिकुटी केरों अर्थ बुझाय।
जकरों मोंन भटकतै बाहर,
एकदम जैतै ओझराय।। (४८)

एक वार सतहत्तर सालें,
जालंधर के मोंन बनाय।
नौ अक्टूबर केरों छेलै,
आरक्षित टिकटो बनवाय।। (४९)

कलकत्ता में छेलै बाबा,
सत्संगी शीला के द्वार।
करतें रहलै चार–पाँच दिन,
वहीं ठहर सत्संग प्रचार।। (५०)

नौ अक्टूबर बाबा बोलै,
दिन आ गया आज रविवार।
पश्चिम की यात्रा करनें में,
है कुछ संकट का आसार।। (५१)

संतसेवी महाराज करै,
टिकट कटैलों केरों जिक्र।
सेवक के मजबूरी जानी,
बाबा कहै चलो बेफिक्र।। (५२)

'जो स्वर चले ताहि पग दीजैं',
बाबा बोलै सोच–विचार।'
'इक टक्कर कालहूँ से दीजै,'
नैं बूझै बोलै के सार।। (५३)

गुरुदेवों के हाथ थम्हाबै,
सब्भैं अपनों–अपनों रास।
ठाम्हैं एक धमाका होलै,
जकरों नैं कुछ छेलै आस।। (५४)

टार्च जलाबै देखै सबकें,
सब्भे छेलै ठीके ठाक।
अगला डब्बा सें कानै के,
आवाजों कें सुनी अवाक।। (५५)

खड़ी मालगाड़ी सें होलै,
टक्कर नैनी में तत्काल।
ईंजन के पीछू के डब्बा,
चूर–चूर लोगो बेहाल।।(५६)

ईंजन केरों पता कहीं नैं,
घायल के होलै उपचार।
'जो स्वर चलै ताहि पग दीजै',
ई बातों पर करों विचार।। (५७)

चलै अमृतसर, गुरुद्वारा भी,
बाबा यात्रा के दौरान।
हरि मंदिर घूमी–घामी कें,
भागलपुर लें करै पयान।। (५८)

वहीं मिलै छै पत्रकार जी,
छेलै नाम विजय निर्बाध।
सोचै छै कुछ प्रश्न पूछना,
नैं होतै कोनों अपराध।। (५९)

पत्रकार पूछै बाबा सें,
बड़ा कठिन सद्गुरु के खोज।
वस्त्र गेरुआ धारण करलों,
साधु–संत देखै छी रोज।। (६०)

दाढ़ी, मूँछ बढैथैं बैठै,
पकड़ी कोनों देवस्थान।
चन्दन माथा लेपी समझै,
ठाम्हैं अपनाँ कें भगवान।। (६१)

मेँहीँ बाबा हस्सें लगलै,
पत्रकार के सुनथैं बोल।
'मैं तो ऐसा नहीं समझता,
ना मैं हूँ वह फुट्टा ढोल।।' (६२)

आगू संन्यासी के व्याख्या,
बाबा के होलै बेजोड़।
व्याख्या सें ही पत्रकार के,
जीवन में ऐलै कुछ मोड़।। (६३)

एक प्रश्न पूछै छै फेनूँ,
भाषा में लानी बदलाव।
पत्रकार कें बाबा सें कुछ,
सीखै के झलकै छै चाव।। (६४)

'अहं ब्रह्मास्मि' उक्ति पूर्णतः,
सही मानते हैं क्या आप।
यही उक्ति क्या छोड़ चुकी है,
दिल–दिमाग पर पूरा छाप।। (६५)

सद्गुरु महाराज जी बोलै,
ओठों पर लानी मुस्कान।
'सही पूर्णतः मान रहा हूँ,
पर कैसे! इस पर दो ध्यान।।' (६६)

नदी मिले जैसे सागर में,
अपना सब अस्तित्व मिटाय।
उसी भाँति यह जीव ब्रह्म में,
जाकर प्रतिष्ठित हो जाय।। (६७)

जीवात्मा 'स्व' का त्याग कर के फिर,
परमात्मा में होवे लीन।
अपने को जब समझे हरपल,
जल से बाहर जैसे मीन।। (६८)

वेद ऋचाओं का उच्चारण,
महापुरुष की है पहचान।
उक्ति सही तब ही तो होगी,
समझो इसको देकर ध्यान।। (६७)

पुनः प्रार्थना केरों स्वर में,
पत्रकार पूछै छै बात।
'नहीं भूलता हूँ ईश्वर को,
करूँ याद मैं भी दिन–रात।। (७०)

कमी यही है मैं पूजा का,
नहीं जानत एक विधान।
ऐसे को भी कभी शरण में,
रख पायेंगे क्या भगवान।।' (७१)

यै बातों पर बाबा पहिनें,
काम करै छै पूरा ठप्प।
तबें पत्रकारों के आगू,
कहै महाभारत के गप्प।। (७२)

'एकबार अर्जुन जब आये,
मिलने मधुसूदन के पास।
मधुसूदन को ध्यान लगाये,
देखा तो हो गया हतास।। (७३)

आँख खुली जब मधुसूदन की,
बोला अर्जुन हे भगवान।
सारी दुनिया तो करती है,
सदा आपका केवल ध्यान।। (७४)

ध्यान आप करते हैं किनका,
बतला दें प्रभु मैं अनजान।
माथा–पच्ची लाख करूँ मैं,
जरा नहीं होता अनुमान।।' (७५)

अर्जुन केरों प्रश्न अनूठा,
सुनथैं बोलै छै भगवान।
'उनका ध्यान सदा मैं करता,
जो मेरा करते हैं ध्यान।।' (७६)

कथा महाभारत के बोली,
बाबा करै ज्ञान के दान।
'सच्चा मानो नहीं चाहते,
परमेश्वर विधि और विधान।।' (७७)

सदा भावना के भूखे हैं,
कभी–कभी ही करना याद।
पर इस मन से नहीं भुलाना,
बाबा का इतना फरियाद।। (७८)

सब्भे प्रश्नों के उत्तर सें,
समझै भजन–भेद के गूर।
बाबा के आगू में होलै,
पत्रकार के शंका दूर।। (७९)

○○○

सर्ग 19

संसारों के कुछ्छू देशें, बाबा के सम्मान।
व्यक्तित्व चमकतें रहै सदा, जेना कें दिनमान।। १।।

देशों सें कुछ दूर देश छै, कहलाबै छै रूस।
कहीं झोपड़ी, कहीं इमारत, कहीं–कहीं छै फूस।। २।।

कहीं गरीबी, कहीं अमीरी, झंडा लाल निशान।
साम्यवाद केरों अनुयायी, देशों के पहचान।। ३।।

भक्ति–भाव भरलों धरती पर, आस्तिक–नास्तिक लोग।
छै देशी गौरव–गाथा में, सब्भै के सहयोग।। ४।।

रूसों में बाबा के शिष्या, नीना छेलै नाम।
बाबा केरों ध्यान करै में, बीतै सुबहो–शाम।। ५।।

रूसी शिष्या नीना पूजै, बाबा के तस्वीर।
डाँटै बापें 'फेको इसको' नीना बड़ी अधीर।। ६।।

'महर्षि मेँहीँ परम हंस जी, भारत केरों सन्त।
इनकी महिमा जितनी गाऊँ, होगा कभी न अन्त।।' ७।।

अपने सद्गुरु महाराज का, कैसे हो अपमान।
नस–नस में अब समा गया है, बाबा का सम्मान।। ८।।

उत्तर सुनथैं आग बबूला, पिता दिखाबै क्रोध।
की दुनियादारी छै देखों, बातों के प्रतिशोध।। ८।।

'बिरूद्ध रूसी परंपरा के, पहुँचाई है ठेस।
घर से बाहर शीघ्र निकल जा, पालन कर आदेश।।' १०।।

बाबा के तस्वीर हाथ में, पूजा के सामान।
नीना घर सें बाहर निकलै, करनें ही गुणगान।। ११।।

इधर पुलिस घर में आ धमकै, 'नीना कहाँ बताव।
कैद किये जाओगे या तो, जल्दी वापस लाव।।' १२।।

नीना खोजी वापस लानै, बाबा अहिनों सन्त।
माँफी माँगै पिता तखनियें, महिमा छै बेअंत।। १३।।

कोस हजारों दूर रहै जे, बाबा ध्यान लगाय।
कुप्पाघाटों सें बैठी कें, दै छै कष्ट भगाय।। १४।।

दयालुता के देव कहावै वाला बाबा सन्त।
आश्रम में बीमार पड़ै जे, भेजै दवा तुरन्त।। १५।।

शीला देवी कलकत्ता सें, ऐलै बाबा पास।
बहुत दिनों सें दर्शन केरो, रहै लगैनें आस।। १६।।

रातो भर अपना कमरा में, कानी करलक भोर।
बाबा खुद आबी दै दर्शन, देखै आँखी लोर।। १७।।

बाबा बोलै आश्रम आकर, क्यों बैठी हो मौन।
आँख खोलकर दुनिया देखो, जानो मैं हूँ कौन।। १८॥

शीला बोलै 'बाबा मैं तो, खूब रही हूँ जान।
अहैतुकी जो कृपा–प्रेम है, सबकी है पहचान।। १९॥

साधारण औरत होकर मैं, कई पुरुष के साथ।
लड़ी मुकदमा, विजय लगी है, हरदम मेरे हाथ।। २०॥

अद्‌भुत कृपा आपकी गुरुवर, जीवित हूँ मैं आज।
बाबा तो अन्तर्यामी हैं, छिपा नही है राज।।'' २१॥

'आगे भी हर कष्ट हरूँगा, हर लूँगा अवसाद।
बाबा अपनों निवास गेलै, दें कें आशीर्वाद।।' २२॥

कष्ट हरलकै मेँहीँ बाबा मेटै सब भय–त्रास।
आशिष पाबी प्रसन्न होलै, छेलै बड़ी हतास।। २३॥

रहै गेहुआँ साँप गुफा में लाठी में लटकाय।
सेवक बाहर लानी दै छै बड्‌डी दूर भगाय।। २४॥

आश्रम छोड़ै कारण चिन्तित गेलै गंगा ओर।
मछुआ देखी डरलै फेनूँ लाठी मारै जोर।। २५॥

गंगा तट पर मरण लिखलका, पूरा होलै आज।
बेचारा निर्दोष नाग पर तत्क्षण गिरलै गाज।। २६॥

बाबा सुनथैं कानी भरलै 'हुआ बहुत अन्याय।
आश्रम का ही एक देवता चला गया ठुकराय।।' २७॥

कुप्पा घाटें कुत्ता बिल्ली चूहा खोलै साथ।
भूल्हौ सें नैं समझै कखनूँ कोनों जीव अनाथ।। २८॥

एक बार साधक ध्यानों में, बिच्छू बीचे–बीच।
चललों गेलै बाबा केरों, आगू बड़ा लगीच।। २९॥

ढेरी लोगों के बीचों में, बिच्छू भी निश्शंक।
जीव–जीव में भेद जरा नैं, चलतै केना डंक।। ३०॥

सदा ह्वील चेयर पर बैठी, बाबा राखै ध्यान।
बाबा के आश्रम में छेलै, सब्भै के कल्याण।। ३१॥

सहिष्णुता के दूत हमेशा, नैं चाहै अपकार।
करतें रहलै कृतघ्नता के, भी हरपल सत्कार।। ३२॥

आश्रम बीच डकैती होलै, लूटै पूरा धोंन।
बाबा दण्ड डकैतों कें दै, सबके अहिनें मोंन।। ३३॥

बोलै बाबा 'एक बार जब' घर में आग लगाय।
देख रहा था खड़ा तमाशा, निकला जान बचाय।। ३४॥

दौड़ पड़ा वह दुष्ट हाथ में, लेकर झट तलवार।
इक सत्संगी आगे आकर, बचा लिया झट वार।। ३५॥

मैंने उसको माँफ किया था, प्रभु को ना स्वीकार।
कुष्ट रोग से ग्रसित कष्ट में, छोड़ा जब संसार।। ३६॥

रामनुजम जिला अधिकारी, भागलपुर का नाम।
प्रभावित सत्संग सें पूरा, आबी करै प्रणाम।। ३७॥

आगू बोलै भागलपुर सें, बदली के संवाद।
बाबा के शरणों में ऐलै, लै लें आशीर्वाद।। ३८॥

भागलपुर सें पटना जैबै, ऐलों छै कुछ पत्र।
बाबा बोलै 'भागलपुर से, जाना मत अन्यत्र।। ३९॥

बदली नहीं हुई है जानो, कहना मेरा मान।'
कार्यालय में आबी, गेलै कागज ऊपर ध्यान।। ४०॥

रहै स्थगित बदली के लिखलों, पढ़थैं मन खुशहाल।
ढेर दिनाँ पर फेनूँ ऐलै, बदली के भूचाल।। ४१॥

परम हंस मेँहीँ बाबा कें, बदली केरों बात।
जिलाधिकारी जाय सुनाबै, दिखाबै कागजात।। ४२॥

'जाओ, उन्नति करके आओ,' बाबा के आसीस।
ऐलै बनी कमिश्नर फेनूँ, जाय झुकाबै शीश।। ४३॥

पुनः कमिश्नर भागलपुर के, पैदल कुप्पा घाट।
कोनों आयोजन आश्रम के, जोहै इनकों बाट।। ४४॥

महाराज जी नरतन धारी, नरलीला के हेतु।
जीव–ब्रह्म कें जोड़ै वाला, बनलों छेलै सेतु।। ४५॥

महा संत सेबी बाबा जे, रहै सदा नजदीक।
मेँहीँ बाबा के कामों सें, उनखौ लागै दीक।। ४६॥

रोग ग्रस्त उनका देखै छै, जौनें करै इलाज।
सेवक सब परेशान लगै छै, बदलै सब्भे साज।। ४७॥

नंदलाल मोदी पटना के, ठीक करलकै रोग।
दुर्बलता के कारण छूटै, दिनचर्या के योग।। ४८॥

डॉक्टर रामवदन जी आबै, हर सतरह तारीख।
सूई दै के क्रम में बैठै, लै बाबा सें सीख।। ४९॥

बाबा कुछ कमजोर लगै छै, रोग मुक्ति के बाद।
नरलीला के सूत्रधार भी, देखै दवा मुराद।। ५०॥

बैठकखाना में बैठी कें, बाबा करै विचार।
'सदा दवाई के चक्कर में, लगा हुआ संसार।।' ५१॥

बाबा बोलै सेवकगण सें, 'अगला तिथि को आय।
सूई डाक्टर दे पायेंगे, संभव नहीं लखाय।।' ५२॥

कहै संत सेवी बाबा जब, पक्का उनकों बात।
केना फनूँ भुलैतै गुरुवर, डॉक्टर छै विख्यात।। ५३॥

बाबा बोलै देख सकोगे, आ जाने दो वक्त।
ई बातों कें भूली सब्भे, कामों में अनुरक्त।। ५४॥

ईश्वर के लीला ही बोलों, या बाबा के बात।
सतरह कें डॉक्टर नें ऐलै, आसें बजलै सात।। ५५॥

अगला दिन आबी कें डॉक्टर, प्रकट करलकै खेद।
बाबा नें बतलैनें छेलै, खोली कें कुछ भेद।। ५६॥

डॉक्टर बोलै 'अन्तर्यामी बाबा से कुछ बात।
छिपी रहेगी बड़ा असंभव, हुआ मगर आघात।। ५७॥

माफ करेंगे बाबा निश्चय, ऐसा है अनुमान।
मेरी लाचारी जो कुछ है, करना व्यर्थ बखान।। ५८॥

प्रश्न स्वास्थ्य के महाराज का, झूठा का आरोप।
उलाहना भी एक आप का, खुशी हुई सब लोप।। ५९॥

कहै सन्त सेवी बाबा भी, चिन्ता के नैं बात।
बाबा स्वयं बतैनें छेलै, बैठी कें इक रात।। ६०॥

बाबा अन्तर्यामी छेकै, नैं तनियों संदेह।
हमरा उपर बाबा केरों, पूरा–पूरा स्नेह।। ६१॥

सूई लेना बन्द करलकै, बाबा ऐसैं ठीक।
बाबा केरों अनंत महिमा, जानै जे नजदीक।। ६२॥

बाबा के मस्तिष्क कहावै, बैठै–सूतै पास।
महासंत सेवी बाबा पर, बाबा कें भी आश।। ६३॥

दूर नजर सें जाबें नैं दै, बोलै वचन विचार।
क्यों दिन–रात दवा के चक्कर में उलझा संसार।। ६४॥

ध्यान–साधना, तप–योगों में, मानव का उपचार।
स्वस्थ शरीर अगर रखना है, समुचित कर आहार।। ६५॥

कहै सन्त सेवी बाबा तब, हम्में सब अनजान।
लगलों छै लालसा हमेशा, पाबौ बढ़िया ज्ञान।। ६६॥

अन्तर्मुख अपना कें करना, छठी भक्ति कहलाय।
भगता के चाल निराली छै, कबीर साहब गाय।। ६७॥

उपदेशों में मेँहीँ बाबा, कहनें छै जे बात।
ऊ सब नैं जीवन में भूलों, याद करों दिन–रात।। ६८॥

ईश्वर की ओर चला जाना, ईश्वर की है भक्ति।
ईश्वर का यश गान करोगे, तभी मिलेगी मुक्ति।। ६९॥

इन्द्रिय–ज्ञानों की खोजों में, नहीं कभी कल्याण।
बुद्धि नहीं कोई इस जग में, जो उसको ले जान।। ७०॥

इन्द्रियों के ज्ञान में संभव, नहीं प्रत्यक्ष ज्ञान।
जीवात्मा करती अपने से, अपने को पहचान।। ७१॥

आत्म ज्ञान से ईश्वर दर्शन, ईश्वर की पहचान।
ज्ञान बिना है योग अधूरा, योग बिना क्या ज्ञान।। ७२॥

ज्ञान–योग सत्संग वचन में, साधन संभव मान।
वेद वाक्य या सन्त वाक्य में, तालमेल भी जान।। ७३॥

सत्संगति संसृति कर अंता, उक्ति बड़ी अनमोल।
ध्यान–योग सर्वोत्तम ही है, कहती गीता खोल।। ७४॥

साधु संग में मन से बैठो, समझो कथा प्रसंग।
बाह्य इन्द्रियाँ धोखा देंगी, और करेंगी तंग।। ७५॥

युद्ध अनिवार्य हिंसा समझो, अगर बचाना देश।
हिंसा जो व्यवसायिक होती, वह देती है क्लेश।। ७६॥

जननी जन्मभूमि की रक्षा, करना प्राण गमाय।
बाबा गेलै चोला बदली, सब्भै कें समझाय।। ७७॥

बाबा के उपदेश उतारै, जीवन में जे कोय।
रोग–शोक–दुख–तकलीफों सें, बड़ी उबारा होय।। ७८।।

नानक, सूर, कबीर हमेशा, गैनें छै जे गीत।
वै में मिश्री घोल मिलै छै, वै में छै नवनीत।। ७९।।

तुलसी बाबा, देवी बाबा, मेँहीँ बाबा रोज।
जीवों के कल्याणों लेली, करनें छै नित खोज।। ८०।।

मेँहीँ बाबा पोछै छेलै, दीन–दुखी के लोर।
फैलैनें छै बाबा चहुँदिश, धरती पर इंजोर।। ८१।।

'संत सहहि दुख परहित लागी,' करनें छै चरितार्थ।
बाबा के कोनों कामों में, कहीं जरा नैं स्वार्थ।। ८२।।

जात–पात या कर्मकाण्ड के, करतें रहै विरोध।
साम्प्रदायिक कट्टरता केरों, बनै सदा अवरोध।। ८३।।

सर्वाधार वहेँ सर्वेश्वर, आदि कहीं नैं अंत।
सदा, अजन्मा, अलख–अगोचर, मानै छै सब संत।। ८४।।

हर जीवों में वहेँ समैलों, भेद–भाव बेकार।
मेँहीँ बाबा जीवन केरों, सच्चा छेलै सार।। ८५।।

○○○

सर्ग 20

'प्रकृति संतुलन खो देती है, तन का क्या है कहना।
दुख में, सुख में हर हालत में, आँसू को है बहना।। १।।

सत्यम् देह 'व्याधिमंदिरम्' फिर भी मत घबड़ाना।
यत्न करो तो छुट जायेगा, जग में आना–जाना।। २।।

मेँहीँ बाबा केरों छेलै, कथन बड़ा ई सुन्दर।
जन–जन के कल्याण समैलों, छेलै उनका अंदर।। ३।।

प्रकृति कहाँ छोड़ै छै ककरा, मेँहीँ बाबा जानै।
ई तथ्यों सें दूर कभी भी, अपना कें नैं मानै।। ४।।

प्रोस्टेट ग्लैण्ड फनूँ हर्नियाँ, ऑपरेशन कराबै।
ई भारी कष्टों के बाबा, कारण भी बतलाबै।। ५।।

'धोखे से बचपन में मैंने, जब मछली खाया था।
वह भारी अपराध हुआ था, तभी समझ पाया था।। ५।।

करनी का फल भोग रहा हूँ, इससे क्या घबड़ाना।
हर गलती का इस जीवन में, होगा ही फल पाना।।' ७।।

कभी आँख में, कभी दाँत में, बाबा दर्द बताबै।
आश्रम केरोॅ सेवक दौड़ी, डॉक्टर तुरत बुलाबै।। ८।।

डॉक्टर कें आदर सें बाबा, कुर्सी पर बैठाबै।
सत्संगों के महिमा पूरा, डॉक्टर कें समझाबै।। ९।।

तीसरी अवस्था जीवन के, अन्तर्मुख हो ज्यादा।
शांत–एकांत रहै हमेशा, जीवन जीयै सादा।। १०।।

सूरज निकलै, नीचें बैठी, दतवन करतें–करतें।
अन्तर्मुख देखी कें सेवक, बोलै डरतें–डरतें।। ११।।

हालत भोजन–जलपानों में, देखी आश्रमवासी।
ध्यान दिलाबै आबी–आबी, भजन–भेद अभिलाषी।। १२।।

चलतें–फिरतें, खैतें–पीतें, या सूतै के बेरी।
अन्तर्मुख देखी बाबा कें, सत्संगी लै घेरी।। १३।।

बड़ा विचित्र दशा सब देखै, कभी–कभी घबड़ाबै।
कखनू डाँटै सेवक सब कें, कभी–कभी समझाबै।। १४।।

अन्तर्मुख होला पर बाबा, डूबै ज्ञान–समुन्दर।
दुनिया के सब दृश्य मनोहर, देखै अंदर–अंदर।। १५।।

हँस उठना, रो पड़ना चाहें अन्तर्मुख हो जाना।
कभी बहिर्मुख होकर भोजन, जल्दी–जल्दी पाना।। १६।।

कभी–कभी तें मध्य रात में, पहरेदार बुलाबै।
पहरा समय कभी मत सोना, बोली कें समझाबै।। १७।।

हरदम रहै साथ जे सेवक, खोजी पास बुलाबै।
बैठी–बैठी बाबा सब कें, मन के बात बताबै।। १८।।

सन तेरासी तीस जुलाई, बाबा बैठी बोलै।
'हे अश्वत्थामा मुक्तो भव,' सेवक के मन डोलै।। १९।।

उच्चों–उच्चों आवाजों में, जे नैं वैठाँ छेलै।
ई ठो नाम कहाँ सें कहिनें, बाबा होठें खेलै।। २०।।

सेवक जब पूछै छै बाबा। ककरों नाम सुनै छी।
अश्वत्थामा कहाँ मिलै छै, माथा अगर धुनै छी।। २१।।

परम हंस मेँहीँ बाबा तब, सेवक कें समझाबै।
द्वापर युग के बात यहाँ पर, सभै कें बतलाबै।। २२।।

''द्रोणाचार्य सुनो द्वापर में, गुरुपद पाया भारी।
अश्वत्थामा पुत्र उन्हीं का, निकला अत्याचारी।। २३।।

पाया था वरदान अमरता का वह वीर धनुर्धर।
कौरव के दल में वह रहकर, उतर गया था छल पर।। २४।।

युद्ध महाभारत में कौरव, पाण्डव से जब हारा।
अश्वत्थामा के तन–मन में, चढ़ा क्रोध का पारा।। २५।।

पाण्डव के पाँचो पुत्रों को, सोये काट दिया था।
उत्तरा के गर्भस्थ शिशु को, भी बेजान किया था।'' २६।।

भीम पकड़कर अश्वत्थामा, लाया सबके आगे।
माँफ किया गुरु पुत्र समझकर, क्षमादान जब माँगे।। २७।।

कृष्ण उसी क्षण आकर बोला, अरे दुष्ट हत्यारा।
निर्दोषी बालक को तूने, बेरहमी से मारा।। २८॥

एक भ्रूण–हत्या का दोषी, आगे पछताओगे।
अंत्यज योनि प्राप्त करके तुम, मर्त्यलोक आओगे।। २९॥

मस्तक से दुर्गंध युक्त तब, हरपल खून बहेगा।
वर्ष हजारों दुख की हालत, पूरा कष्ट सहेगा।। ३०॥

अश्वत्थामा भयभीत हुआ, गिरा चरण में आकर।
मुक्ति मार्ग बतलादो केशव, बोला शीश झुकाकर।। ३१॥

केशव बोला कलियुग में तब तेरा पाप टलेगा।
महान् ब्रह्मचारी संत का, आशीर्वाद मिलेगा।। ३२॥

तब होगा उद्धार तुम्हारा, जीवन सफल बनेगा।
दुष्कर्मों का दंड भोगना, सबको यहाँ पड़ेगा।।'' ३३॥

ई ठो कथा सुनाबै बाबा, फेनूँ मौन रहै छै।
ठाम्हैं जोरों सें मुस्काबै, आगू बात कहै छै।। ३४॥

अश्वत्थामा का दुर्दिन अब, अंत हो गया जानो।
मैंने उसको मुक्त किया अब, सत्य यही है मानो।। ३५॥

बाबा केरों बात मिलाबौं, घटना एक सुनै छी।
ऊ घटना के ताना–बाना, हम्में यहाँ बुनै छी।। ३६॥

किस्सा कहै राजेन्द्र बाबू, किवदन्ती भी मानों।
जमालपुर के आस–पास में, एक कुण्ड छै जानों।। ३७॥

ऋषि कुण्ड नाम से जाने छै, वहाँ गरम जल झरना।
जीव भयावह वहाँ बसै छै, मगर व्यर्थ छों डरना।। ३८॥

ऋषि–मुनि ध्यानों वहाँ करै छै, जग्घों बड़ी मनोहर।
जगह–जगह के लोग वहाँ पर, आबै छै सालो भर।। ३९॥

मलेमास जे साल लगै छै, लगै वहाँ पर मेला।
माह भरी लोगों के जमघट, सगरे ठेलम ठेला।। ४०॥

एगो संत अनंत दास जी, छेलै जन हितकारी।
ऋषि कुण्डों में आबी–आबी, बैठे छप्पर छारी।। ४१॥

आबै कखनूँ बाघ वहाँ पर, बाबा आगू घूमै।
बाबा के गोड़ों लग बैठी, अंगूठा भी चूमै।। ४२॥

कहै बाबा अनंत दास जी, 'घूमो जंगल जाकर।
निश्छल भक्त यहाँ आते हैं, नहीं डराना आकार।।' ४३॥

एक बार जंगल सें निकली, मानव एगो आबै।
उनका मस्तक पर घावों के, विकट रूप झलकाबै।। ४४॥

धूवै घाव गरम पानी सें, रहै बड़ा हत्यारा।
कृष्ण शाप कें भोगै छेलै, द्रोणाचार्य दुलारा।। ४५॥

मुक्त हुवै थोड़े दिन बादें, सचमुच अश्वत्थामा।
करने रहै महाभारत में, वें पूरा हंगामा।। ४६॥

मन–बुद्धि–चित्त अहंकार सें, जे आगू बढ़ि आवै।
मोह–पाश सें मुक्त रहै जे, सच्चा संत कहाबै।। ४७॥

सर्ग–21

सदा बहत्तर ईस्वी तक तें, सत्संगों में ध्यान।
पर उपकारों कें अपनाबै, करै सदा कल्याण।। १ ।।

सड़सठ में ही जखनी देखै, वृद्धावस्था आय।
बत्तीस शिष्य कें दीक्षा दै, अधिकारो समझाय।। २ ।।

एक लाख भक्तों कें बाबा, भजन–भेद बतलाय।
पंचानवे वर्ष तक हरदम, करतें रहै भलाय।। ३ ।।

अस्सी ईस्वी सें दूर कहीं, जाना दै छै छोड़।
कुप्पाघाटों सें ही खाली, नाता राखै जोड़।। ४ ।।

सौ बरसों के आयु हमेशा, करै रहै लाचार।
महाराज जी अविचल धामों लेली छै तैयार।। ५ ।।

जेठ महीना शुल्क पक्ष जब, ग्यारहवीं रविवार।
आठ–जून सन् रहै छियासी, बाबा देह बुखार।। ६ ।।

'सुकिरत कर ले, नाम सुमरले', बाबा गावै गीत।
मृत्युदेव के विकट घड़ी में, संभव लागै जीत।। ७ ।।

डॉक्टर राजहंस के साथें, लक्ष्मी कांत सहाय।
बाबा कें कुछ दिन राखै के, सोचै बैठ उपाय।। ८ ।।

नब्ज टटोलै, नाड़ी की गति, बिल्कुल छेलै मंद।
तभी सन्त सेवी बाबा भी, देखै धड़कन बन्द।। ९ ।।

खबर सुनी डॉक्टर जब आबै, होलै बड़ा अधीर।
जाँच करी कें तत्क्षण बोलै, अब निष्प्राण शरीर।। १०।।

रात बजै दस लगभग जखनी, बाबा तें निस्तेज।
पर सब्भै कें झलकै छेलै, मुख मंडल पर तेज।। ११।।

पार्थिव शरीर त्यागी गेलै, बाबा तें सुरलोक।
हाहाकार मचै आश्रम में, छैलै पूरा शोक।। १२।।

एक सौ एक बरस बितावै, दिन भी इकतालीस।
लाखों के माथा पर हरदम, बाबा के आसीस।। १३।।

पंच भौतिक शरीर त्याग कर, शब्दातीत अनाम।
पद में होलै लीन जहाँ सें, लौटै के नैं काम।। १४।।

मगर 'मोक्ष मैं नहीं चाहता', बाबा करै बयान।
'लौट शीघ्र मैं आ जाऊँगा, करने को कल्याण।। १५।।

सच्चा दिल सें कभी पुकारों, करों अगर तों याद।
बाबा आबी दर्शन देथों, सुनथों सब फरियाद।। १६।।

भौतिक शरीर त्याग करै के, गेलै खबर विदेश।
अंतिम दर्शन लेली उमड़ै, पूरा भारत देश।। १७।।

दस जूनों कें सात बजे ही, महासभा बोलाय।
शोक प्रस्ताव पारित होलै, विह्वल जन समुदाय।। १८।।

अग्नि संस्कार अहिनों पावन, करै हेतु शुभ काम।
पूज्य संत सेवी बाबा के, आदर सें लै नाम।। १९।।

तुरत विमान बनै लकड़ी के, बाबा कें लेटाय।
रजनी गंधा, श्वेत कमल सें, खूब विमान सजाय।। २०।।

पटना, कलकत्ता सें लकड़ी, चन्दन केरों आय।
सत्संगी सब बैठी–बैठी, बाबा के गुण गाय।। २१।।

आश्रम स्थित ऊँचा टीला पर, चिता बनै बेजोड़।
भीड़ उमड़लों छूवें चाहै, बाबा केरों गोड़।। २२।।

समय पाँच पच्चीस बतावै, नजर घड़ी पर जाय।
पूज्य संत सेवी बाबा जब, संस्कारों लें आय।। २३।।

घी में सनलों चन्दन लकड़ी, पकड़ै जल्दी आग।
'मैँहीँ बाबा अमर रहे' के, निकलै सुन्दर राग।। २४।।

बादल के टुकड़ा कुछ आबी, ऊपर में मँड़राय।
धीरें–धीरें अंधेरा भी, अपनों असर दिखाय।। २५।।

पच्चीस कलश में राखी कें, तुरत चिता के भस्म।
गंगा जल में करी प्रवाहित, सन्त निभावै रश्म।। २६।।

कलश एक ठो समाधि लेली, आश्रम लानै संत।
पार्थिव शरीर साथ चिता के, मिललै जाय अनंत।। २७।।

महाराज के कमरा बीचें, अस्थि कलश के रूप।
स्थापित [illegible] ी करलों गेलै, लागै परम अनूप।। २८।।

[illegible] समाधि मंदिर, के होलै निर्माण।
[illegible] ों ऊँचाई, वै में दया निधान।। २९।।

तभी [illegible]

संख्या बैरागी शिष्यों के, तीनों सौ सें पार।
संतमत–सत्संग के जौनें, करै सदा परचार।। ३०।।

बिहार–झारखंड के सब्भे, शहर रहै या ग्राम।
मंदिर भव्य सुशोभित सगरे, प्रवचन सुवहो–शाम।। ३१।।

भारत के कोना–कोना में, शिष्य सगर अनुमान।
विदेश अमरिका, इंगलैण्डो, रूस, पाक, जापान।। ३२।।

मुख्य साधन स्थल स्वास्थ्यबर्द्धक, आश्रम बिल्कुल शांत।
मनियारपुर आरू धरहरा, मनिहारी एकान्त।। ३३।।

ई सब्भे जग्घों पर बाबा, बारी–बारी जाय।
जीवन के बहुमूल्य समय कें, कुछ–कुछ वहीं बिताय।। ३४।।

बाबा छेलै परम दार्शनिक, सब गुण के आगार।
दार्शनिक मतों के रूपों में, इनकों मत स्वीकार।। ३५।।

ब्रह्म–जीव में अन्तर समझै, व्यापक रहै विचार।
चेतन शक्ति सृष्टि के भीतर, करै हिनी स्वीकार।। ३६।।

ब्रह्म–ब्रह्माण्ड समझै लेली, स्थापित मत छै ढेर।
दर्शन जकरा बोलें पारों सब कें नै छै टेर।। ३७।।

कत्तों छै दर्शन ई कहना, बड़ा कठिन छै काम।
आस्तिक–नास्तिक भेदों साथें, षड् दर्शन के नाम।। ३८।।

व्यक्ति ब्रह्म–जीव, जगत–माया, पर सोचै हर वक्त।
वहें दार्शनिक होतै जे छै, दर्शन में आशक्त।। ३९।।

तुरत विमान बनै लकड़ी के, बाबा कें लेटाय।
रजनी गंधा, श्वेत कमल सें, खूब विमान सजाय।। २०॥

पटना, कलकत्ता सें लकड़ी, चन्दन केरों आय।
सत्संगी सब बैठी–बैठी, बाबा के गुण गाय।। २१॥

आश्रम स्थित ऊँचा टीला पर, चिता बनै बेजोड़।
भीड़ उमड़लों छूवें चाहै, बाबा केरों गोड़।। २२॥

समय पाँच पच्चीस बतावै, नजर घड़ी पर जाय।
पूज्य संत सेवी बाबा जब, संस्कारों लें आय।। २३॥

घी में सनलों चन्दन लकड़ी, पकड़ै जल्दी आग।
'मेँहीँ बाबा अमर रहे' के, निकलै सुन्दर राग।। २४॥

बादल के टुकड़ा कुछ आबी, ऊपर में मँड़राय।
धीरें–धीरें अंधेरा भी, अपनों असर दिखाय।। २५॥

पच्चीस कलश में राखी कें, तुरत चिता के भस्म।
गंगा जल में करी प्रवाहित, सन्त निभावै रश्म।। २६॥

कलश एक ठो समाधि लेली, आश्रम लानै संत।
पार्थिव शरीर साथ चिता के, मिललै जाय अनंत।। २७॥

महाराज के कमरा बीचें, अस्थि कलश के रूप।
स्थापित तखनी करलों गेलै, लागै परम अनूप।। २८॥

संस्कार स्थान समाधि मंदिर, के होलै निर्माण।
साठ फीट जकरों ऊँचाई, वै में दया निधान।। २९॥

संख्या बैरागी शिष्यों के, तीनों सौ सें पार।
संतमत–सत्संग के जौनें, करै सदा परचार।। ३०॥

बिहार–झारखंड के सब्भे, शहर रहै या ग्राम।
मंदिर भव्य सुशोभित सगरे, प्रवचन सुवहो–शाम।। ३१॥

भारत के कोना–कोना में, शिष्य सगर अनुमान।
विदेश अमरिका, इंगलैण्डो, रूस, पाक, जापान।। ३२॥

मुख्य साधन स्थल स्वास्थ्यबर्द्धक, आश्रम बिल्कुल शांत।
मनियारपुर आरू धरहरा, मनिहारी एकान्त।। ३३॥

ई सब्भे जग्घों पर बाबा, बारी–बारी जाय।
जीवन के बहुमूल्य समय कें, कुछ–कुछ वहीं बिताय।। ३४॥

बाबा छेलै परम दार्शनिक, सब गुण के आगार।
दार्शनिक मतों के रूपों में, इनकों मत स्वीकार।। ३५॥

ब्रह्म–जीव में अन्तर समझै, व्यापक रहै विचार।
चेतन शक्ति सृष्टि के भीतर, करै हिनी स्वीकार।। ३६॥

ब्रह्म–ब्रह्माण्ड समझै लेली, स्थापित मत छै ढेर।
दर्शन जकरा बोलें पारों सब कें नैं छै टेर।। ३७॥

कत्तें छै दर्शन ई कहना, बड़ा कठिन छै काम।
आस्तिक–नास्तिक भेदों साथें, षड् दर्शन के नाम।। ३८॥

व्यक्ति ब्रह्म–जीव, जगत–माया, पर सोचै हर वक्त।
वहें दार्शनिक होतै जे छै, दर्शन में आशक्त।। ३९॥

चारो विषय बड़ा छै व्यापक, यै में सारा ज्ञान।
सदा समैलों पर सब्भै कें, नैं होतै पहचान।। ४०॥

दर्शन के परिभाषा ढेरी, देनें छै जे सन्त।
मेँहीँ बाबा हरदम खोजै, नैं छै जकरों अन्त।। ४१॥

गुरु के भक्ति, साधु के सेवा, करै हमेशा ध्यान।
परम हंस मेँहीँ बाबा कें, दर्शन के पहचान।। ४२॥

सुकरातों के परिभाषा के, करै सदा सम्मान।
ज्ञाने चादर, ज्ञान बिछौना, ज्ञाने सब परिधान।। ४३॥

संतमतों के परंपरा में, बाबा केरों योग।
जाति–पाति के भेद मिटाबै, जे समाज के रोग।। ४४॥

बाल काल में दुबला–पतला, बाबा केरों शक्ल।
मेँहीँ नाम रखै में सब्भैं, बड़ी लगावै अक्ल।। ४५॥

बाबा नाम करलकै सार्थक, मेँहीँ महीन काम।
देश–विदेशों में फैलाबै, भागलपुर के नाम।। ४६॥

यूकिको फ्यूजिता देखै छै, सपना में जे रूप।
भागलपुर कुप्पाघाटों में, देखै रूप अनूप।। ४७॥

लाल सखे के अनुपम घटना, बाबा जहाँ सुनाय।
कैसें जानै कुप्पाघाटें, सोची मन चकराय।। ४८॥

कलकत्ता सें चलै जलंधर, दुर्घटना के ख्याल।
सेवक नैं चेतै छै तइयो, बचलै बाले–बाल।। ४९॥

दण्ड दिलाबें दुष्टों कें जब, सत्संगी के राय।
आगू जीवन में चेतै लें, बाबा दै समझाय।। ५०॥

अश्वत्थामा उद्धार करै, बाबा अपनाँ हाथ।
द्वापर सें कलियुग तक ऐलै, बड़ा दुखों के साथ।। ५१॥

पाँच पुत्र पाण्डव के मारै, अश्वत्थामा जाय।
भीम पकड़नें घीची लानै, जहाँ रहै यदुराय।। ५२॥

माँफ करै द्रौपदी सही में, कृष्ण मगर दै शाप।
द्रौपदी केरों अनुशरण में, बाबा के परिताप।। ५३॥

प्रमोद दासें चरण दबावै, पर भोजन पर ध्यान।
'जाओ तुम भोजन कर आओ' बाबा करै बयान।। ५४॥

बाबा कैसें जानी गेलै, हमरों मन के बात।
प्रमोद दास रहै चिन्ता में, सोची कें दिन–रात।। ५५॥

सौतेला भाई किंकर के, बेटा बिनोद लाल।
बाबा जब परलोक सिधारै, उनका एक मलाल।। ५६॥

नादानुसंधान के दीक्षा, लेना छेलै शेष।
मेँहीँ बाबा इनकों छेलै, ब्रह्मा, विष्णु, महेश।। ५७॥

गुरु भाई सें दीक्षा लेना, नैं मानै उपयुक्त।
दीक्षा बिना नैं संभव होना, भव बंधन सें मुक्त।। ५८॥

एक दिनाँ सपना में आबी, दै दीक्षा के दान।
स्वप्न भंग होला पर बाबा, होलै अन्तर्ध्यान।। ५९॥

सपना में देलों दीक्षा कें, सम्राट दीक्षा बोल।
महापुरुष सब समझैनें छै, जे सचमुच अनमोल।। ६०॥

एक बालिका रिंकी छेली, माता केरों साथ।
संध्या–बाती लेली घूमै, दीपक लेनें हाथ।। ६१॥

दीपक सें बच्ची के देहें, लागी गेलै आग।
पर रिंकी कें छेलै बड्डी, बाबा सें भी लाग।। ६२॥

कानै नैं चिल्लावै बच्ची, देखों कथा विचित्र।
खाढ़ी होलै जहाँ टाँगलों, बाबा केरों चित्र।। ६३॥

अरज सुनलकै मेँहीँ बाबा, टललै सब्भे काल।
कपड़ा छोड़ी बच्ची केरों, जलै एक नैं बाल।। ६४॥

एगो पगली बाबा आगू, टेकै जखनी माथ।
बाबा दुखड़ा तुरत सुनलकै, बड़ी धैर्य के साथ।। ६५॥

क्षण में पगली चंगा भेली, सब दुख होलै दूर।
बाबा के ई कथा–कहानी, संतन में मशहूर।। ६६॥

झूलन देवी बहिन दाय जब, होली मरनासन्न।
बाबा कें नित याद करै बस, त्यागी देलक अन्न।। ६७॥

गंगा जल झट पान कराबै, जाना चाहै दूर।
परिवारों के लोग करलकै, ठहरै पर मजबूर।। ६८॥

बाबा मन के बात बताबै, करला पर प्रस्थान।
तभिये छोड़ी जैतै जग सें, बहिन दाय के प्राण।। ६९॥

बाबा जैसें घर सें निकलै, बहिन दाय के प्राण।
निकली गेलै देहों सें झट, देह रहै बेजान।। ७०॥

मेँहीँ बाबा के आगू में, नैं टिकलै यमराज।
आँख पसारी देखी लै छै, पूरा गाँव समाज।। ७१॥

मेँहीँ बाबा केरों महिमा, देखौं बड़ा विचित्र।
देश–विदेशों में छिड़कावै, सदभावों के इत्र।। ७२॥

सब संतों के एक्के मत छै, जानी पकड़ै राह।
ई राहों पर सब लोगों कें, लानै केरों चाह।। ७३॥

झूठ–नशा, चोरी–हिंसा या व्यभिचारों सें दूर।
जे रहतै उनका जीवन में, सुख–सुविधा भरपूर।। ७४॥

पंच पाप छेकै दुनिया में, मानव के सब रोग।
मुक्ति मिलै ई रोगों सें जब, करों ध्यान–तप–योग।। ७५॥

आवागमन जीव के होना, दुक्खों के आधार।
ईश्वर भक्ति आराधना बिन, नैं ककरो निस्तार।। ७६॥

छुआछूत सीमा रेखा कें, करनें छेलै पार।
वही घड़ी में होलों छेलै, बाबा के अवतार।। ७७॥

नैं विचलित तनियों टा होलै, सहतें रहलै कष्ट।
करै कुचेष्टा, भारी निन्दा, जे छेलै पथ भ्रष्ट।। ७८॥

गौतम बुद्धौ केरों हालत, जे छेलै ऊ काल।
मेँहीँ बाबा भोगै छेलै, ऊ सब्भे तत्काल।। ७९॥

जीवन धन्य बनाबै लेली, जे उनकों सहयोग।
कृतज्ञता दर्शाबै लेली, करों ध्यान–तप–योग।।८०॥

जौनें मोल समय के जानै, ऊ होलै 'अनमोल'।
मोल समय के जे नैं जानै, ऊ होलै 'अन' मोल।।८१॥

वक्त गुजरतें रहथों हरदम, पकड़ो कस्सी भाय।
वक्त गुजरलों वापस कहियो, लौटी कें नैं आय।।८२॥

हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख यहाँ नैं, बाबा के उपदेश।
यहें भेद–भावों के चलतें, जीवन में छौं क्लेश।।८३॥

संस्कृति आरू मूल्य हमेशा, आवश्यक दू तत्व।
जीवन जीयै के लेली छै, जकरों बड़ा महत्व।।८४॥

श्रद्धा, करुणा, समता, मैत्री, ई सब छेकै मूल।
भक्ति–प्रेम सब यहें असलका, पूजा केरों फूल।।८५॥

जुल्मों के चक्की तें चलथों, थोड़े दिन लें जान।
रावण–कंसों रङ् पापी के, हटलों छै अभियान।।८६॥

रामायण के बाते सब्भे, भूली गेलै लोग।
स्वारथ में डुबलों छै पूरा, बड़ी भयानक रोग।।८७॥

ईख निचोड़ों रस निकलै छै, सरसों पेरों तेल।
सन्त–मतों कें पूरा मत्थों, नैं लगथों बेमेल।।८८॥

सुरत आवरण पार करी कें, सार शब्द में लीन।
रहै उन्मुखी रहनी आरू, समाधि में तल्लीन।।८९॥

सच्चा सद्गुरु वहें कहावै, जिनकों दर्शन मात्र।
सर्वेश्वर सें मिलना समझों, बतलाबै छै शास्त्र।।९०॥

शक्ति उपस्थिति सद्गुरु केरों, कतनों मोंन रमाय।
परिमित रहतै सदा साधना, विनय करों मन लाय।।९१॥

गुरुगुण अमित अमित को जाना, बाबा कहै पुकार।
संक्षेपहि सब करै बखाना, नैं जानै बिस्तार।।९२॥

सब समुद्र कें थाह लगाना, पानी भी तौलाय।
गंगातट के बालू सब्भे, गिनती करलों जाय।।९३॥

सब ग्रह नक्षत्रों के साथें, मुट्ठी में भी आय।
पर सद्गुरु गुण केरों वर्णन, इतिश्री कहाँ लखाय।।९४॥

विद्या वरदा सरस्वती रङ्, वक्ता ज्यों अनमोल।
गणपति लेखन कर्त्ता बैठै, आँखो दर्जन खोल।।९५॥

लेकिन लिखना संभव नैं छै, गुरु महिमा सम्पूर्ण।
वक्ता, लेखनकर्त्ता थकतै, रहतै सदा अपूर्ण।।९६॥

चतुर्मुख ब्रह्मा, पंचमुख शिव, षडानन कार्त्तिकेय।
गुरुगुण गाना अपनों–अपनों, अगर बनाबै ध्येय।।९७॥

कृति गावें सहस्र मुख वाला, साथें मिलतै शेष।
महिमाधारी केरों महिमा, नैं होतै नि:शेष।।९८॥

धर्मशास्त्र के पन्ना–पन्ना, में गुरु के यशगान।
अनंत उपकारी गुरु गाथा, के करतै अवसान।।९९॥

○○○

सन्दर्भ ग्रन्थ :

(१) जीवन यात्रा सद्गुरु महर्षि मेँहीँ
(२) महर्षि मेँहीँ संक्षिप्त जीवन–वृत्त और उपदेश
(३) सन्त पीयूष (स्मारिका)
(४) महिर्ष मेँहीँ चरित्र
(५) सन्तकवि मेँहीँ व्यक्तित्व
(६) सत्संग सुधा
(७) शांति–सन्देश
(८) महर्षि मेँहीँ लीलामृत
(९) अपने गुरु की याद में
(१०) साधक पीयूष

हीरा प्रसाद 'हरेन्द्र' : एक परिचय

जन्म : 06/09/1950, कटहरा, सुलतानगंज, (भागलपुर)

सम्मान/पुरस्कार/उपाधि :

1. डॉ0 अम्बेदकर फेलोशिप, राष्ट्रीय सम्मान (05/12/2001)
(दलित साहित्य अकादमी, दिल्ली)
2. खूब लाल महतो स्मृति पुरस्कार (उत्तंग हमरॉ अंग लेली)
(अ0 भा0 अंगिका साहित्य कला मंच) (09/06/2001)
3. जगदीश पाठक मधुकर– कुल विभाकर (05/05/2002)
(समय साहित्य सम्मेलन, पुनसिया, बाँका)
4. इन्दिरा देवी स्मृति सम्मान (12/08/2003) (बरियारपुर, मुंगेर)
5. जनार्दन बाबू रजत स्मृति सम्मान (08-09/11/2003)
(अ0भा0 अंगिका साहित्य कला मंच, खगड़िया)
6. पंडित गोपी नाथ तिवारी पुरस्कार (25/12/2005)
जाह्नवी अंगिका संस्कृति संस्थान, पटना
7. सरला स्मृति साहित्यकार सम्मान (अंगप्रिया के सफल सम्पादन लेली)
जानकीपुर पबई (बाँका) (09/12/2007)
8. गोपाल प्रसाद सिंह सेवा निवृत प्र0 अ0 स्मृति सम्मान
(बाबा दूबे भयहरण स्थान सलेमपुर, अमरपुर (बाँका) 8 मार्च 2008)
9. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र रजत स्मृति सम्मान ('ठकहरा' लेली) (15/06/2008)
(हिन्दी भाषा साहित्य परिषद्, खगड़िया)
10. पंडित जगदीश पाठक मधुकर, काव्य साहित्य साधना स्मृति सम्मान
(भागलपुर प्रमण्डलीय अ0भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन)
11. स्व0 वैकुण्ठ विहारी स्मृति सम्मान (तारापुर, मुंगेर)
12. राहुल सांकृत्यायण स्मृति सम्मान (21 फरवरी2010)
अन्तर्राज्य सद्भावना बहु–भाषी काव्योत्सव, उधाडीह, भागलपुर
13. आदिकवि सरहपा स्मृति सम्मान (11 अप्रैल 2010)
अ.भा. अंगिका साहित्य कला मंच सरहपापुरम्, कहलगाँव
14. जय प्रकाश मोदी स्मृति सम्मान (14 मार्च 2011)
कवि रत्न (विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ)
15. हास्य शिरोमणि सम्मान। 9.5.13 महादेवपुर (अमरपुर) बाँका।

16. भगीरथ बाबा अंग साहित्य सम्मान। 01.02.2014,
अखिल भारतीय अंगिका साहित्य विकास समिति
17. माहताब अली रजत स्मृति सम्मान। 09.0302914
भावांजलि लेली, हिन्दी भाषा साहित्य परिषद् खगड़िया।
18. उमानाथ पाठक स्मृति सम्मान। 30.03.2014
अजगवी नाथ साहित्य मंच, सुलतानगंज
1. कवि रत्न (विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ)
2. अंग श्री (अ0 भा0 भाषा साहित्य सम्मेलन प्रमंडलीय शाखा, भागलपुर)
3. अंग श्री (क्षेत्रीय सर्वभाषा कवि सम्मेलन, खड़िया, मुंगेर)
4. साहित्य श्री (अ0 भा0 भाषा साहित्य सम्मेलन, भोपाल)
5. साहित्य रत्न (मंगनी लाल स्मृति ट्रस्ट, बौंसी, बाँका)
6. अंग शिरोमणि (राज्य स्तरीय सर्व भाषा सद्भावना काव्योत्सव, उधाडीह, भागलपुर)
7. कवि शिरोमणि (विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, गाँधीनगर, ईशीपुर, भागलपुर)
8. पंचशील शिरोमणि (पंचशील चैरिटेबुल सोसायटी, 25/4 कड़कड़ दुम्म एरिया,
सेंट्रल बैंक के ऊपर, नई दिल्ली 110092–भारत)
9. अंग–पतंग (अ0भा0 अंगिका साहित्य सम्मेलन, जिला शखा–भागलपुर)
10. अंगिका सपूत (अ0भा0 अंगिका साहित्य कला मंच प्रखण्ड शाखा–शंभुगंज)
11. महाकवि– (विक्रमशिला हिन्दी विद्या पीठ)

प्रशस्ति (ढेर साहित्यिक संस्थाओं द्वारा)

देश विदेश के स्तरीय पत्रिका में रचना प्रकाशित आरु आकाशवाणी भागलपुर तथा दूरदर्शन पटना से अंगिका आरू हिन्दी रचना संप्रसारित
शैली–विसंगति में हास्य खोजी कें व्यंग्य प्रहार करना।
महामंत्री– अखिल भारतीय अंगिका साहित्य कला मंच।
सम्प्रति–सम्पादक– मंजिल / अंगप्रिया

सम्पर्क – ग्राम+पो0–कटहरा, सुलतानगंज (भागलपुर)–813213
मो0–9931854246